धवल पुस्तक ९

classmate
Date
Page

पृ-३२४

करणकृति

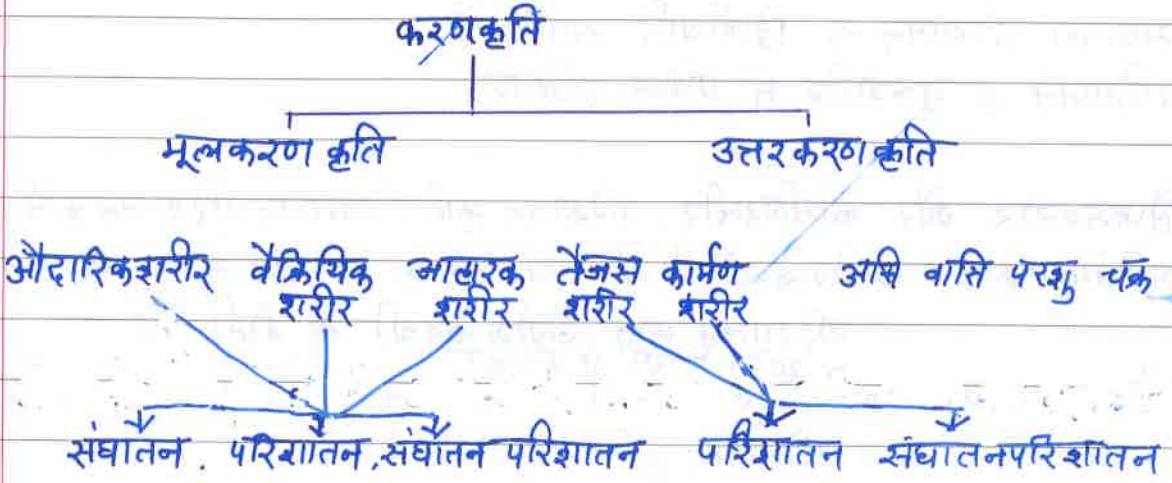

मूलकरण कृति — उत्तरकरण कृति

औदारिकशरीर, वैक्रियिक शरीर, आहारक शरीर, तैजस शरीर, कार्मण शरीर — असि वासि परशु चक्र इ.

संघातन, परिशातन, संघातन परिशातन — परिशातन, संघातनपरिशातन

शेष करणों की प्रवृत्ति इस शरीर से होती है अत: शरीर को मूलकरण कहते हैं।

संघातन → विवक्षित शरीर के परमाणुओं का निर्जरा के बिना संचय होना
परिशातन → " " पुद्गलस्कन्धो की संचय के बिना निर्जरा होना।
संघातनपरिशातन → " " " का आगमन और निर्जरा का एक साथ होना

पृ.३२६ औदारिक शरीर की संघातन, परिशातन और संघातन परिशातन कृति कब होता है?
1) संघातनकृति → तिर्यंच और मनुष्यों के उत्पन्न होने के प्रथम समय में
2) संघातनपरिशातन → द्वितीय समय से लेकर आगे के समयों में
3) परिशातन → तिर्यंच और मनुष्यों द्वारा उत्तर शरीर के उत्पन्न करने पर

वैक्रियिक शरीर की संघातन, परिशातन और संघातन परिशातन कृति
1) संघातन → देव व नारकियों के उत्पन्न होने के प्रथम समय में
2) संघातनपरिशातन → द्वितीयादि समयों में।
3) परिशातन → उत्तर शरीर का उत्पादन कर मूल शरीर में प्रविष्ट हुए मनुष्य और तिर्यंचों के उत्तर शरीर की परिशातन कृति होती है।

औदारिक शरीर विक्रियात्मक और अविक्रियात्मक के भेद से दो प्रकार का है। उनमें जो विक्रियात्मक औदारिक शरीर है उसे यहाँ वैक्रियिक रूप से ग्रहण करना चाहिये

आहारक शरीर की संघातन, परिशातन, संघातनपरिशातन कृति
1) संघातन → आहारकशरीर को उत्पन्न करने के प्रथम समय में
2) ?

संघातन परिशातन → द्वितीयादि समयों में
परिशातन → मूलशरीर में प्रविष्ट होनेपर

पृ. 322

तैजसशरीर और कार्मणशरीर परिशातन कृति, संघातन परिशातन कृति

1) परिशातन कृति → अयोगकेवली के योग का अभाव हो जाने से इन दो शरीरों की परिशातन कृति अयोगकेवली के होती है।

2) संघातन परिशातन कृति → अयोगकेवली को छोड़कर अन्य सब जगह उक्त दोनों शरीरों की संघातन परिशातन कृति ही होती है।

कृतियों का स्वामित्व

कृति का नाम	उत्कृष्ट कृति का स्वामित्व	जघन्य कृति का स्वामित्व
औदारिकशरीर की संघातन कृति	मनुष्य, मनुष्यनी, तिर्यंच, योनिनी तिर्यंच संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त संख्यात वर्षायुष्क (नारकियों से आया हुआ) तीसरे समय में तद्भवस्थ (दोभोड़ासहित) तद्भवस्थ होने के प्रथम समय में आहारक उत्कृष्ट योगवाला	सूक्ष्म, अपर्याप्त, प्रत्येकशरीरी जीव अनेक बार इस पर्याय को ग्रहण किया हुआ जीव प्रथम समय में तद्भवस्थ (ऋजुगति से आया हुआ) प्रथम समय में आहारक सब से जघन्य योगवाला
औदारिकशरीर की परिशातन कृति	मनुष्य, मनुष्यिनी, पंचेतिर्यंच, योनिनी तिर्यंच, पर्याप्त संज्ञी पूर्वकोटि प्रमाण आयुवाला कर्मभूमिज और कर्मभूमिप्रतिभाग में उत्पन्न भव के प्रथम समय से उत्कृष्ट योग के द्वारा आहार ग्रहण करनेवाला उत्कृष्ट वृद्धि से वृद्धि को प्राप्त उत्कृष्ट योगस्थानों को बहुत बार प्राप्त उपरितन निषेकों में द्रव्य कम नीचे के निषेकों में द्रव्य ज्यादा विक्रियारहित, शरीरछेद रहित. भाषाकाल बार कम, मनोयोगकाल बार कम,	बादर वायुकायिक जीव भव के प्रथम समय से जघन्य योग के द्वारा आहार ग्रहण करनेवाला जघन्य वृद्धि से वृद्धि को प्राप्त जघन्य योगस्थानों को बहुत बार प्राप्त उसके योग्य जघन्य योगवाला बहुत बहुत बार प्राप्त अधस्तन निषेकों में द्रव्य ज्यादा ऊपर के निषेकों में द्रव्य कम सर्वलघुकाल में पर्याप्ति को प्राप्त हुआ सर्वलघु काल में उत्तर शरीर की विक्रिया को करनेवाला,

कृति का नाम	उत्कृष्ट स्वामित्व	जघन्य स्वामित्व
	13 भाषा काल अल्प, 14 मनोयोगकाल अल्प 15 जीवित के अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर, योगयव मध्य के ऊपर के स्थान में स्थित, 16 अन्तिम जीवगुणहानि स्थान में ऊपर में आवली के असंख्यातवें भागकाल तक स्थित 10 त्रिचरम, द्विचरम समय में उत्कृष्ट योग को प्राप्त 12 अन्तिम समय में विक्रिया करनेवाले के 9 उत्तर शरीर की विक्रिया करने के प्रथम समय में उत्कृष्ट योगयुक्त जीव के	सर्व चिर काल से जीवप्रदेशों का निक्षेपण करनेवाला. सब से दीर्घ काल तक विक्रिया करनेवाला उस विक्रिया के अंतिम समय में अनिवृत्त बादर वायुकायिक जीव के (विक्रिया की निवृत्ति अभी नहीं हुई उसको अनिवृत्ति कहते हैं)
औदारिक शरीर की संघातन-परिशातन कृति	परिशातन के सब आलाप यहाँ कहना चाहिये। यहाँ विक्रिया को प्राप्त न करके विवक्षित भव के अन्तिम समय में उत्कृष्ट योग से युक्त जीव के	सूक्ष्म अपर्याप्त प्रत्येक शरीर जीव दूसरे समय में तद्भवस्थ अनादि लब्धि में पतित आहारक होने के दूसरे समय में स्थित तद्योग्य जघन्य योग से युक्त जीव के
वैक्रियिक शरीर की संघातन कृति	वैमानिक देव असंबद्ध रूप की विक्रिया करनेवाला, विक्रिया के प्रथम समय में स्थित, उत्कृष्ट योग से युक्त जीव के	असंज्ञी पर्याप्त से देव अथवा नारकी हुआ है, प्रथम समय में तद्भवस्थ प्रथम समय में आहारक, जघन्य योग से युक्त जीव के
वैक्रियिक शरीर की परिशातन कृति	1 मनुष्य, मनुष्यिनी, पं. तिर्यंच, पं. ति. योनिनी 2 संज्ञी, पर्याप्त, पूर्वकोटि आयुवाला 3 कर्मभूमिज, स्वयंप्रभाचलपर्वत के बाहर के भाग में रहनेवाला 4 उत्तर शरीर की विक्रिया के प्रथम समय से उत्कृष्ट योग के द्वारा आहारक 5 उत्कृष्ट वृद्धि से वृद्धि को प्राप्त 6 अधस्तन निषेकों में द्रव्य कम, ऊपर के निषेकों में द्रव्य ज्यादा, अन्तर्मुहूर्त जीवित शेष रहने पर ऊपर के योगस्थानों में रहा है, 8 आवलि के असंख्यातवें भाग काल तक अन्तिम जीवगुणहानि में रहा है	1 बादर वायुकायिक जीव 2 सर्वलघु पर्याप्ति काल में पर्याप्ति को प्राप्त 3 " " काल में उत्तर शरीर की विक्रिया की है 4 विक्रिया के प्रथम समय से जघन्य योग से आहार ग्रहण किया 5 जघन्य वृद्धि से वृद्धि को प्राप्त 6 जघन्य योगस्थानों को बहुत बार प्राप्त 7 अधस्तन स्थितियों के निषेकों में ज्यादा द्रव्य 8 ऊपर के निषेकों में कम द्रव्य 9 स्वल्पकाल तक विक्रिया कर स्थित 10 सर्व चिरकाल से जीवप्रदेशों का निक्षेपण करता है (विक्रिया समाप्त होने के अनन्तर दीर्घ काल तक जीवप्रदेशों का मूलशरीर में प्रवेश करना

कृति का नाम	उत्कृष्ट स्वामित्व	जघन्य स्वामित्व
	१० द्विचरम समय में उत्कृष्ट योग को प्राप्त, ''चरम समय में उत्तर शरीर की विक्रिया की है, सर्व लघुकाल में जीवप्रदेशोंका निक्षेपण करता है, सर्व चिरकाल में विक्रिया की है, विक्रिया निवृत्त होने के प्रथम समय में उत्कृष्ट योगवाले के	उस चरम समय अनिलेपित के (विक्रिया को समेटने पर अन्तर्मुहूर्त काल तक वैक्रियिक शरीर के परमाणुओं का क्षरण होते रहता है उसके प्रथम समय में ज्यादा परमाणु खिरते है क्रम से कम होते हुए अंतिम समय में सब से कम खिरते है इसलिए अंतिम समय में जघन्य स्वामित्व कहा है।
वैक्रियिक शरीर की संघातन-परिशातन कृति	२ आरण अच्युत कल्पवासी देव, बाईस सागरोपम आयुवाला। ३ भव के प्रथम समय से उत्कृष्ट योग से आहार ग्रहण करनेवाला। अन्य सब औदारिक के उत्कृष्ट संघातन परिशातन के समान लगाना	आदर वायुकायिक जीव, सब विशेषताएँ वैक्रियिक के जघन्य परिशातन कृति के समान लगाना। विशेष यह है कि विक्रिया करने के दूसरे समय में जघन्य संघातन परिशातन कृति होती है।
आहारक शरीर की ~~उत्कृष्ट~~ संघातन कृति	आहारक शरीर वाले संयत के आहारक होने के प्रथम समय में उत्कृष्ट योग से संयुक्त होने पर	आहारक शरीर वाले संयत के आहारक होने के प्रथम समय में जघन्य योग से संयुक्त होने पर
आहारक शरीर की परिशातन कृति	आहारक शरीरवाले संयत के आहारक शरीर युक्त होने के प्रथम समय से उत्कृष्ट योग के द्वारा आहार ग्रहण किया शेष सब विशेषताएं वैक्रियिक उत्कृष्ट परिशातन के समान जानना। प्रथम समयवर्ती निवृत्त के उ. परिशातन है	वैक्रियिक शरीर के जघन्य परिशातन के समान जानना आहारक संयत के आहारक शरीर के निवृत्त होने पर (समेटने पर) अंतिम समय में
आहारक शरीर की संघातन परिशातन कृति	उत्कृष्ट परिशातन के समान सब आलाप विशेष यह है कि चरम समयवर्ती अनिवृत्ति उत्कृष्ट योगी के उत्कृष्ट संघातन परिशातन कृति होती है।	आहारक संयत के आहारक शरीर उत्पन्न होने पर दूसरे समय में जघन्य संघातन परिशातन कृति है। अन्य सब विशेषताएँ जघन्य वैक्रियिक के समान जानना।

classmate
Date
Page

कृति का नाम	उत्कृष्ट स्वामित्व	जघन्य स्वामित्व
तैजसशरीर की परिशातन कृति	1) अन्तर्मुहूर्त के अन्तर से 33 सागर ~~स्थि~~ स्थितिवाले दो नारक भवों को प्राप्त, 2) बीच की सब विशेषताए उत्कृष्ट स्वामित्व के आलाप समान। 3) उक्त पर्याय से निकलकर जलचर या थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनि जीवों में उत्पन्न हुआ। पुन: सब उत्कृष्ट के आलाप कहना 4) तत्पश्चात् फिर नरकगति को प्राप्त हो 5) वहाँ से जलचर व थलचर पंचेन्द्रियों में उत्पन्न, 6 अंतर्मुहूर्त जीवित रहकर मरण को प्राप्त होकर गर्भज मनुष्यों में उत्पन्न हुआ, 7 सर्व लघुकाल में योनि से बाहर निकला, 8 " " " सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ। 9 आठ वर्ष का होकर संयम को प्राप्त 10 सर्व लघुकाल में केवलज्ञान को उत्पन्न करता है, 11 सर्व " अयोगी हुआ, उसके प्रथम समय में	६६ सागरोपम काल तक सूक्ष्म जीवों में रहा है वहाँ रहते हुए अपर्याप्त भव बहुत, पर्याप्त भव थोड़े अपर्याप्त काल दीर्घ, पर्याप्त काल थोड़ा 4 जघन्य वृद्धि से वृद्धि को प्राप्त जघन्य योगस्थानों को बहुत बार प्राप्त अधस्तन स्थितिनिषेक का ~~जघन्य~~ उत्कृष्ट पद ऊपर के " जघन्यपद सूक्ष्मपर्याय से निकलकर तिर्यंच होकर अन्तर्मुहूर्त काल तक जीवित रहकर वहाँ से पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्यों में आकर सर्व लघुकाल में योनि निष्क्रमण रूप जन्म से उत्पन्न, सर्व लघुकाल में सम्यक्त्व को प्राप्त आठ वर्ष का होकर संयम को प्राप्त, अतिशीघ्र केवलज्ञान को उत्पन्न करता है, कुछ कम पूर्वकोटि काल तक विहार कर अन्तर्मुहूर्त मात्र आयु के शेष रहने पर अयोगी हुआ, उसके अंतिम समय में क्षपित कर्मांशिक भव्य के
तैजस शरीर की संघातन-परिशातन कृति	दूसरी बार नारक भव के ग्रहण करने पर उस भव के अन्तिम समय को प्राप्त हुए नारकी के	६६ सागरोपम काल तक सूक्ष्म जीवों में रहा ऊपर के उसके ऊपर के स्थितिनिषेक के जघन्य पद तक सर्व आलाप कहना। पश्चात् सूक्ष्म पर्याप्तकों में उत्पन्न हुआ पर्याप्ति-अपर्याप्तियों से एकान्त वृद्धि से बढ़ता हुआ, अपर्याप्तक के जिस समय में बहुत बन्ध व निर्जरा नहीं देखी जाती उस समय में
कार्मण शरीर की परिशातन कृति	दो हजार सागरोपम से कम ३० कोडाकोडी सागरोपम काल तक बादर जीवों में रहनेवाला, पर्याप्त भव अधिक, अपर्याप्त भव थोड़े पर्याप्त भवों का काल दीर्घ, अपर्याप्त काल कम	पल्योपम के असंख्यातवें भाग से हीन तीस कोडाकोडी सागरोपम काल तक सूक्ष्म जीवों में रहा पर्याप्त भव थोड़े, अपर्याप्त भव बहुत अपर्याप्त काल दीर्घ, पर्याप्त काल कम

	उत्कृष्ट स्वामित्व	जघन्य स्वामित्व
	उत्कृष्ट योग से आहारग्रहण करता है उत्कृष्ट वृद्धि से वृद्धि को प्राप्त उत्कृष्ट योगस्थानों को बहुत बार प्राप्त संक्लेश को बहुत बार प्राप्त विशुद्धि को प्राप्त होता हुआ उसके योग्य जघन्य विशुद्धि से सहित नीचे के स्थिति के निषेकों का जघन्य पद ऊपर के " " उत्कृष्ट पद वहाँ से निकलकर पर्याप्त त्रसों मे उत्पन्न अन्तिम भवग्रहणों में 33 सागरोपम स्थितियुक्त नारकियों में उत्पन्न इसके आगे तैजस शरीर के उत्कृष्ट परिशातन के समान जानना। विशेष यह बहुत बार संक्लेश को प्राप्त द्विचरम, त्रिचरम समय में उत्कृष्ट संक्लेश को प्राप्त, चरम, व द्विचरम समय में उत्कृष्ट योग को प्राप्त ~~इस~~ विधान से आये हुए प्रथम समयवर्ती अयोगि जिन के	जघन्य योग से आहारग्रहण जघन्य वृद्धि से वृद्धि को प्राप्त बहुत बार मन्दसंक्लेश को प्राप्त इसप्रकार भ्रमण कर बादर जीवों में उत्पन्न अन्तर्मुहूर्त रहकर पूर्वकोटि आयुवाला मनुष्य सर्वलघुकाल में योनिनिष्क्रमण रूप जन्म " " सम्यक्त्व को प्राप्त आठ वर्ष पूर्ण कर संयम को प्राप्त दो बार कषायों को उपशमाता है मिथ्यात्व को प्राप्त होकर दशहजार वर्षवाले देवों मे उत्पन्न, सम्यक्त्व को प्राप्त अनंतानुबंधी विसंयोजन करके, दशहजार वर्षतक सम्यक्त्व का पालन अन्त मे मिथ्यात्व को प्राप्त होकर बादरों में उत्पन्न अन्तर्मुहूर्त के पश्चात् सूक्ष्म साधारण में उत्पन्न क्षपित कर्मांशिक रूप से पल्योपम के असंख्यातवें भाग काल तक रहकर बादर जीवों मे उत्पन्न हुआ पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्यों में उत्पन्न दो बार कषायों को उपशमाकर 10,000 वर्षवाले देवों में उत्पन्न, बादर में, पुनः सूक्ष्मो में पल्योपम के असंख्यातवे भाग कालतक रहा, पश्चात् बादर में अन्तर्मुहूर्त काल, पश्चात् पूर्वकोटि आयुवाले मनुष्यो मे उत्पन्न - शेष विशेषता तैजस के जघन्य परिशातन के समान
कार्मणशरीर की संघातन परिशातन कृति	उपर्युक्त उत्कृष्ट परिशातन कृति के समान कहना चाहिये। विशेष इतना है कि सप्तम पृथिवी के नारकी के अन्तिम समय में उत्कृष्ट संघातन परिशातन कृति होती है	उपर्युक्त जघन्य परिशातन कृति के समान सब कहना। विशेष इतना है एकेन्द्रियों में जघन्य संघातन परिशातन कृति होती है।

करण कृतियों का अल्पबहुत्व

	कृतियों का नाम	अल्पबहुत्व	कृतियों का प्रमाण
१	औदारिक शरीर की जघन्य संघातन कृति	सब से कम	जघन्य उपपाद योग से प्राप्त एक समय प्रबद्ध
२	औदारिक " " संघातन परिशातन कृति	असंख्यातगुणी	एकान्तानुवृद्धि से प्राप्त एक समयप्रबद्ध + (ज. उ. योग से प्राप्त एक समयप्रबद्ध − प्रथम निषेक)
३	औदारिक शरीर की जघन्य परिशातन कृति	"	एकेन्द्रियों के परिणाम योग से प्राप्त डेढ़ गुणहानि का संख्यातवाँ भाग
४	औदा. शरीर उत्कृष्ट संघातन कृति	"	सं. पंचे. के तद्योग्य उत्कृष्ट एकान्तानुवृद्धि योग से प्राप्त एक समयप्रबद्ध
५	औदा. शरीर उत्कृष्ट परिशातन कृति	"	एक कम डेढ़गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध
६	" " " संघातन परिशातन कृति	विशेष अधिक	एक समयप्रबद्ध से अधिक अर्थात पूर्ण डेढ़गुणहानिगुणित

वैक्रियिक शरीर की कृतियों का अल्पबहुत्व

	कृति का नाम	अल्पबहुत्व	प्रमाण
१)	जघन्य संघातन कृति	सब से कम	देव, नारकी के जघन्य उपपाद योग से प्राप्त एक समयप्रबद्ध
२)	जघन्य संघातनपरिशातन कृति	असंख्यातगुणी	बा. वायु. पर्याप्त के कुछ कम दो समयप्रबद्ध
३)	जघन्य परिशातन कृति	"	" " अनिर्लेपित चरम समय में एक अन्तिम निषेक
४)	उत्कृष्ट संघातन कृति	"	वैमानिक देव के विक्रिया के प्रथम समय में उत्कृष्ट परिणाम योग से प्राप्त एक समयप्रबद्ध
५)	उत्कृष्ट परिशातन कृति	"	मनुष्य, तिर्यंच के मूल शरीर में प्रवेश करने के प्रथम समय में डेढ़ गुणहानि × समयप्रबद्ध
६)	उत्कृष्ट संघातन परिशातन कृति	विशेष अधिक	आरण अच्युत के अन्त में प्राप्त डेढ़ गुणहानि समयप्रबद्ध प्रमाण
१)	आहारक शरीर की जघन्य संघातन कृति	सब से कम	उपपाद योग से प्राप्त एक समयप्रबद्ध
२)	" " जघन्य संघातन परिशातन कृति	असंख्यातगुणी	एकान्तानुवृद्धि से प्राप्त एक समयप्रबद्ध अधिक उपपाद योग से प्राप्त कुछ कम १ समयप्रबद्ध

3) आहारक शरीर उत्कृष्ट संघातन कृति	असंख्यातगुणी	उत्कृष्ट उपपाद योग से प्राप्त एक समय प्रबद्ध
4) आहारक शरीर जघन्य परिशातन कृति	असंख्यातगुणी	एक समयप्रबद्ध का अन्तिम निषेक
5) " " उत्कृष्ट परिशातन	"	उत्कृष्ट परिणाम से आये हुए डेढ़गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध
6) आहारक शरीर उत्कृष्ट संघातन-परिशातन कृति	विशेष अधिक	मूलशरीर में प्रविष्ट होने के प्रथम समय में जीर्णद्रव्य से अधिक
1 तैजस शरीर जघन्य संघातन परिशातन कृति	सब से कम	क्षपित कर्मांशिक के डेढ़ गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध
2 तैजस शरीर जघन्य परिशातन कृति	विशेष अधिक	आठ वर्षों में जितना संचय होगा उतने प्रमाण से अधिक
3) तैजस शरीर उत्कृष्ट परिशातन कृति	असंख्यातगुणी	उत्कृष्ट परिणामयोग से बद्ध डेढ़ गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध
4 तैजस शरीर उत्कृष्ट संघातन परिशातन कृति	विशेष अधिक	मनुष्यों में निर्जीर्ण द्रव्य से अधिक
1 कार्मण शरीर की जघन्य परिशातन	सब से स्तोक	क्षपित कर्मांशिक एकेन्द्रिय सम्बन्धी कुछ कम डेढ़गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र स012–
2 " " " जघन्य संघातन परिशातन कृति	संख्यातगुणी	सू. एके. अपर्याप्त के आठ कर्मों के स्कन्ध चार अघातिया कर्मों की अपेक्षा दुगुणे से कुछ अधिक स012 -1/2
3 कार्मण शरीर की उत्कृष्ट परिशातनकृति	असंख्यातगुणी	गुणित कर्मांशिक का डेढ़ गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र (अयोगी के प्रथम समय में)
4 " " उत्कृष्ट संघातन परिशातन कृति	साधिक दूनी	सातवी पृथ्वी के नारकी के अन्तिम समय में आठ कर्मों के स्कन्ध साधिक दूने

classmate
Date
Page

परस्थान में अल्पबहुत्व

	कृति का नाम			
1)	औदारिक शरीर की	जघन्य संघातन कृति	सब में स्तोक	
2)	" "	" संघातन परिशातन कृति	असंख्यात गुणी	
3)	" "	" परिशातन कृति	"	
4)	" "	उत्कृष्ट संघातन कृति	"	
5)	" "	" परिशातन कृति	"	
6)	" "	" संघातन परिशातन कृति	विशेष अधिक	
7)	वैक्रियिक "	जघन्य संघातन कृति	असंख्यात गुणी	जगश्रेणी ÷ असंख्यात
8)	" "	जघन्य संघातन परिशातन कृति	"	
9)	" "	जघन्य परिशातन कृति	"	
10)	" "	उत्कृष्ट संघातन कृति	"	
11)	" "	उत्कृष्ट परिशातन कृति	"	
12)	" "	" संघातन परिशातन कृति	विशेष अधिक	
13	आहारक "	जघन्य संघातन कृति	असंख्यात गुणी	जगश्रेणी ÷ असंख्यात
14	" "	जघन्य संघातन परिशातन कृति	" "	
15	" "	उत्कृष्ट संघातन कृति	" "	
16	" "	जघन्य परिशातन कृति	" "	
15	" "	उत्कृष्ट परिशातन कृति	" "	
17	" "	" संघातन परिशातन कृति	विशेष अधिक	
18	तैजस शरीर की	जघन्य संघातन परिशातन कृति	अनन्त गुणी	
20)	" "	जघन्य परिशातन कृति	विशेष अधिक	
21)	" "	उत्कृष्ट परिशातन कृति	असंख्यात गुणी	
22)	" "	उत्कृष्ट संघातन परिशातन कृति	विशेष अधिक	
23)	कार्मण शरीर की	जघन्य परिशातन कृति	अनन्त गुणी	
24)	" "	जघन्य संघातन परिशातन कृति	विशेष अधिक दुगुणी	
25)	" "	उत्कृष्ट परिशातन कृति	असंख्यात गुणी	
26	" "	उत्कृष्ट संघातन परिशातन कृति	कुछ अधिक दुगुणी	

अब आठ अनुयोगद्वारों से कृतियों की प्ररूपणा करते है। प्ररूपणा दो प्रकार की है

classmate Date ____ Page ____

1) ओघ (सामान्य) 2) आदेश (मार्गणा, विशेष)

यहाँ संक्षेप से वर्णन करने के लिए संदृष्टियाँ दी है वह इसप्रकार

औ → औदारिक,	संघा → संघातन	अ.सं → असंख्यात
वै → वैक्रियिक	परि → परिशातन	सं → संख्यात
आ → आहारक	संघा-परि → संघातनपरिशातन	असं, बहु → असंख्यात बहुभाग
तै → तैजस	सर्व → सर्वलोक	ज.प्र = जगत्प्रतर
का → कार्मण	लो → लोक	ज.श्रे = जगत्श्रेणी

—→ कुछ कम

	सत् प्ररूपणा	द्रव्यप्ररूपणा	क्षेत्रप्ररूपणा	स्पर्शन
ओघ	औदारिक संघातन	अनन्त	सर्वलोक	सर्वलोक
	औ — संघातन परिशातन	अनन्त	"	"
	औ - परिशातन	ज.प्र. ÷ असं	$\frac{लो}{असं}$, असं.बहु, सर्व	$\frac{लो}{असं}$, असं.बहु, सर्वलोक
	वैक्रियिक — संघा.	"	लो ÷ असं	लो ÷ असं, बिहारवत् सर्वलोक
	" संघा-परि	"	"	लो ÷ असं, $\frac{8}{14}$ —, सर्व - मारणान्तिक समु.
	" परि	"	"	लो ÷ असं, सर्व.
	आहारक - संघा.	संख्यात	"	लो ÷ असं
	" — परि	"	"	"
	" — संघा-परि	"	"	"
	तै. का. — परि	"	"	"
	तै. का. - संघा-परि	अनन्त	सर्व.	सर्व
आदेश नरकगति	वै. संघा	असंख्यात	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	वै. संघा-परि	"	"	$\frac{लो}{असं}$, प्र.पृ $\frac{लो}{असं}$, द्वि.पृ $\frac{1}{14}$ -, तृ.पृ $\frac{2}{14}$ -, चौ $\frac{3}{14}$ -, पाँ $\frac{4}{14}$ -, छ $\frac{5}{14}$ -, सा $\frac{6}{14}$ -
	तै.का. संघा-परि	"	"	" " " " " " " "
तिर्यंचगति	औ. संघा	अनन्त	सर्व	सर्व
	औ. संघा-परि	"	"	सर्व
	औ. परि	ज.प्र ÷ असं	लो ÷ असं	लो ÷ असं, सर्व

classmate Date ______ Page ______

मार्गणा का नाम	सत्	द्रव्य (संख्या)	क्षेत्र	स्पर्शन
तिर्यंचगति	वै. संघा	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं, सर्वलोक (मारणा.)
	वै. परि	"	"	" "
	वै. संघा-परि	"	"	" "
	तै.का. संघा-परि	अनन्त	सर्वलोक	सर्वलोक
पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पर्याप्त पंचे. योनिनी तिर्यंच,	औ. संघा	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं
	औ. परि	"	"	लो÷असं, सर्वलोक (मारणा.)
	औ. संघा-परि	"	"	" "
	वै. संघा	"	"	" "
	वै. परि	"	"	" "
	वै. संघा-परि	"	"	" "
	तै.का. संघा-परि	"	"	" "
पंचेन्द्रिय ति. अपर्याप्त	औ. संघा	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं,
	औ. संघा-परि	"	"	" सर्वलोक
	तै.का. संघा-परि	"	"	" " "
मनुष्य गति सा. मनुष्य, पर्याप्त मनु.	औ. संघा	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं
	औ. संघा-परि	"	"	लो÷असं, सर्वलोक
	औ. परि	संख्यात	लो÷असं, असं. बहु, सर्व	" , असं. बहु, सर्व
	वै. तीनों पद	संख्यात	लो÷असं	" , सर्व
	आ. तीनों पद	"	"	लो÷असं
	तै. का. संघा-परि	असंख्याते	लो/असं, असं. बहु, सर्व	लो÷असं, असं. बहु, सर्व
	तै. का. परि	संख्यात	लो÷असं	लो÷असं
मनुष्यिनी	मनुष्य के समान वि- आहारक पद नहीं			
मनुष्य अपर्याप्त	पंचे. ति. अपर्याप्त के समान			

विशेष स्पष्टीकरण →

1) केवलिसमुद्घात के प्रतर और लोकपूरण अवस्था में औदारिक शरीर की परिशातन कृति

होती है इसलिए उसका क्षेत्र और स्पर्शन लोक का असंख्यात बहुभाग व सर्व लोक बताया है। प्रतर समुद्घात में जीव के प्रदेश वातवलय छोड़कर संपूर्ण लोक में फैलते है इसलिए असंख्यात बहुभाग है और लोकपूरण में सर्व लोक में आत्मा के प्रदेश फैलते है अतः सर्वलोक क्षेत्र व स्पर्शन होता है।

2) मनुष्यों में तै.का संघा-परि का स्पर्शन भी इसीप्रकार जानना

3) पंचे.तिर्यंच और मनुष्यों में जहाँ सर्वलोक स्पर्शन कहा है वह मारणान्तिक समुद्घात और उपपाद की अपेक्षा समझना।

मार्गणा	सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
देवगति सौधर्म, ऐशान	वै. संघा वै. संघा-परि तै.का. संघा-परि	असंख्यात " "	लो÷असं " "	लो÷असं विहार मारणा. लो÷असं, $\frac{८}{१४}$, $\frac{९}{१४}$ " " "
भवनत्रिक	वै. संघा वै. संघा-परि तै. का. संघा-परि	" " "	" " "	लो÷असं स्वस्थान स्वविहार पदविहार मार. लो÷असं, $\frac{७}{२८}$, $\frac{८}{१४}$, $\frac{९}{१४}$ " " " "
सानत्कुमार से सहस्रार तक	वै. संघा वै. संघा-परि तै.का. संघा-परि	" " "	" " "	लो÷असं लो÷असं, विहार, मार. $\frac{८}{१४}$
आनत से अच्युत तक	वै. संघा वै. संघा-परि तै. का. संघा-परि	" " "	" " "	लो÷असं लो÷असं, वि. मार. $\frac{६}{१४}$ " "
नौ ग्रैवेयक, नव अनु दिश, ५ अनुत्तर सर्वार्थसिद्धि	वै. संघा वै. संघा-परि तै.का. संघा-परि तीनों पद	संख्यात असंख्यात " संख्यात	लो÷असं " " "	लो÷असं " " "

classmate Date Page

मार्गणा	सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
इंद्रियमार्गणा एके. एके.प.	तिर्यंच के समान	तिर्यंचवत्	तिर्यंचवत्	तिर्यंचवत्
बा.एके, बा.एके पर्याप्त.बा.एके अपर्या	औ. [illegible]ा	अनंत	लो ÷ संख्यात	लो ÷ संख्यात
	औ. संघा-परि	"	सर्वलोक	सर्वलोक
	तै.का. संघा-परि	"	"	"
बा.एके. बा.एके पर्याप्त	वै. संघा	असंख्यात	लो ÷ असंख्यात	लो ÷ असं, सर्व
	वै. संघा-परि	"	"	" "
	वै. परि	"	"	" "
	औ. परि	"	"	लो ÷ असं सर्व
सू.एके, सू.एके.पर्याप्त अपर्याप्त	औ. संघा	अनंत	सर्वलोक	सर्वलोक
	औ. संघा-परि	"	"	"
	तै. का. संघा-परि	"	"	"
विकलेन्द्रिय	औ. संघा	असंख्यात	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	औ. संघा-परि	"	"	लो ÷ असं, सर्व
	तै. का. संघा-परि	"	"	" "
पंचे, पंचे.पर्याप्त	औ. संघा	"	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	औ. संघा-परि	"	"	लो ÷ असं, सर्वलोक
	औ. परि	"	$\frac{लो}{असं}$, असं.बहु, सर्व	लो ÷ असं, असं.बहु, सर्व
	वै. संघा	"	लोक ÷ असं	लो ÷ असं सर्वलोक
	वै. संघा-परि	"	"	लो ÷ असं, $\frac{८}{१४}$ - सक्र, सर्व
	वै. परि	"	"	लो ÷ असं सर्व
	आ. संघा	संख्यात	"	लो ÷ असं
	आ. परि	"	"	"
	आ. संघा-परि	"	"	"
	तै.का. संघा-परि	असंख्यात	$\frac{लो}{असं}$, असं.बहु, सर्व	$\frac{लो}{असं}$, $\frac{८}{१४}$ -, असं.बहु, सर्व
	तै.का. परि	संख्यात	लो. ÷ असं	लो ÷ असं
पंचे, अपर्याप्त	पंचे. तिर्यंच अपर्याप्त के समान	पं.ति.अपर्याप्त वत्	पं.ति.तिर्यंच अपर्याप्त वत्	तिं.पंचे.अपर्याप्तवत्

मार्गणा	सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
पृथ्वी, जल, सू.पृथ्वी, सू.जल, सूक्ष्म तेज, सू.वायु उनके पर्याप्त व अपर्याप्त	औ - संघा	असंख्यात	सर्वलोक	सर्वलोक
	औ. संघा-परि	"	"	"
	तै.का. संघा-परि	"	"	"
बा.पृथ्वी, बा.जल, और उनके अपर्याप्त, बा.तेज अपर्याप्त, प्रत्येक शरीर व उनके अपर्याप्त	औ. संघा	असंख्यात	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	औ. संघा-परि	"	सर्व	सर्व
	तै.का.संघा-परि	"	सर्व	सर्व
बादर पृथ्वी पर्याप्त, ब जल पर्याप्त, प्रत्ये. पर्याप्त	औ. संघा	"	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	औ. संघा-परि	"	"	सर्व "
	तै. का. संघा-परि	"	"	सर्व "
तेजकायिक, वायुकायिक	औ - संघा	असंख्यात	सर्व	सर्व
	औ. संघा-परि	"	सर्व	सर्व,
	तै.का. संघा-परि	"	सर्व	सर्व
	औ. परि	"	लो ÷ असं	लो ÷ असं, सर्व
	वै. तीनों पद	"	"	" "
बादर तेजकायिक	औ. संघा	"	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	औ. संघा-परि	"	सर्व	सर्व
	तै.का.संघा-परि	"	सर्व	सर्व
	औ. परि	"	लो ÷ असं	लो ÷ असं, सर्वलोक
	वै. तीनों पद	"	"	" "
बादर तेज. पर्याप्त	औ. संघा	"	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	औ. संघा-परि	"	"	लो ÷ असं, सर्वलोक
	तै.का. संघा-परि	"	"	" "
	औ. परि	"	"	" "
	वै. तीनों पद	"	"	" "

विशेष 1) बादर तेजकायिक पर्याप्त और बा.वायुकायिक पर्याप्त जीव ही विक्रिया करते है इसलिए उनमें ही औ. परिशातन और वैक्रियिक के तीनों पद है अन्य एकेन्द्रियों में नहीं।

2) बा. वायुकायिक जीव मध्यलोक से ऊपर पांच घनराजु पर्यंत ठसाठस भरे हुए हैं इसलिए उनका क्षेत्र और स्पर्शन लोक का संख्यातवाँ भाग होता है।

मार्गणा	सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
बादर वायुकायिक	औ. संघा	असंख्यात	लोक÷संख्यात	लो÷संख्यात
	औ. संघा-परि	"	सर्व	सर्व
	तै. का. संघा-परि	"	सर्व	सर्व
	औ. परि	"	लो÷असंख्यात	लो÷असं, सर्व
	वै. तीनों पद	"	"	"
बा. वायु. पर्याप्त	औ. संघा	"	लो÷संख्यात	लो÷संख्यात
	औ. संघा-परि	"	"	लो÷संख्यात, सर्व
	तै. का. संघा-परि	"	"	" "
	औ. परि	"	लो÷असं	लो÷असं
	वै. तीनों पद	"	"	"
बा. वायु. अपर्याप्त	औ. संघा	"	लो÷संख्यात	लो÷संख्यात
	औ. संघा-परि	"	सर्व	सर्व
	तै. का. संघा-परि	"	सर्व	सर्व
वनस्पति, नि. जीव सू. वन. सू. नि. जीव उनके पर्याप्त अपर्याप्त	औ. संघा	अनन्त	सर्व	सर्व
	औ. संघा-परि	"	"	"
	तै. का. संघा-परि	"	"	"
बादर वनस्पति, बा. नि. गोद, उनके पर्याप्त अपर्याप्त	औ. संघा	अनन्त	लो÷असं	लो÷असं
	औ. संघा-परि	"	सर्व	सर्व
	तै. का. संघा-परि	"	सर्व	सर्व
त्रस, त्रस पर्याप्त	औ. संघा	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं
	औ. संघा-परि	"	"	" , सर्व
	औ. परि	"	$\frac{लो}{असं}$, असं. बहु, सर्व	क्षेत्र के समान
	तै. का. संघा-परि	"	" " "	लो÷असं, $\frac{8}{14}$-, असं-बहु, सर्व
	वै. संघा, वै. परि	"	लो÷असं	लो÷असं, सर्वलोक
	वै. संघा-परि	"	"	लो÷असं, $\frac{8}{14}$-, सर्व
	आहारक तीनों पद	संख्यात	लो÷असं	लो÷असं

मार्गणा	सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
त्रस अपर्याप्त	औ. संघा	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं
	औ-संघा-परि	,,	,,	,, , सर्व
	तै. संघा-परि	,,	,,	,, ,,
योगमार्गणा ५ मनोयोगी, ५ वचनयोगी	औ. परि, औ-संघापरि	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं, सर्व
	वै. परि	,,	,,	,, ,,
	वै. संघा-परि	,,	,,	$\frac{लो}{असं}$, $\frac{८}{१४}$-, सर्व
	तै. का. संघा-परि	,,	,,	,, ,, ,,
	आ. परि, आ-संघापरि	संख्यात	लो÷असं	लो÷असं
काययोगी	औ. संघा, संघापरि	अनन्त	सर्व	सर्व
	औ. परि	असंख्यात	$\frac{लो}{असं}$, असं.बहु, सर्व	क्षेत्र के समान
	वै. संघा, वै. परि	,,	लो÷ असं	लो÷असं, सर्व
	वै. संघापरि	,,	,,	लो÷ असं, $\frac{८}{१४}$-, सर्व
	तै.का. संघा-परि	अनन्त	सर्व	सर्व
	आ. तीनों पद	संख्यात	लो÷ असं	लो÷ असं
औदारिक काययोग	औ. परि	असंख्यात	लो÷ असं	लो÷असंख्यात, सर्व
	औ. संघा-परि	अनन्त	सर्व	सर्व
	तै.का. संघा-परि	,,	सर्व	सर्व
	वै. तीनों पद	असंख्यात	लो ÷ असं	लोक÷असं, सर्व
	आ. परि	संख्यात	लो ÷ असं	लो÷ असं
औदारिक मिश्रकाय योग	औ. संघा	अनन्त	सर्व	सर्व
	औ. संघापरि	अनन्त	सर्व	सर्व
	तै. का. संघापरि	अनन्त	सर्व	सर्व
वैक्रियिक काययोग	वै. संघापरि	असंख्यात	लो÷ असं	लो÷असं, $\frac{८}{१४}$-, $\frac{१३}{१४}$
	तै.का. संघापरि	,,	लो÷ असं	लो÷असं, ,,

मार्गणा	सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
वैक्रियिक मिश्रकाय योग	वै. संघा वै. संघापरि तै. का. संघापरि	असंख्यात " "	लो÷असं " "	लो÷असं लो÷असं, " " "
आहारक काययोग	औदा. परि आहा. संघापरि तै. का. संघापरि	संख्यात " "	लोक÷असं " "	लो÷असं " "
आहारक मिश्र कायकाग	औदा. परि आ. संघा आ. संघापरि तै. का. संघापरि	" " " "	" " " "	" " " "
कार्मण काययोग	औ. परि. तै. का. संघा-परि	संख्यात अनन्त	लो, असं, बहु. सर्व सर्व	क्षेत्र के समान सर्व

1) औदारिक की संघातन कृति औदारिक मिश्र काययोग में ही होती है, अन्य योगों में नहीं
2) तैजस और कार्मण की परिशातन कृति अयोगी केवली में ही होती है इसलिए किसी भी योग में तै. का. परि. कृति नहीं कही।
3) आहारक की संघातन कृति आहारक मिश्रकाययोग में ही होती है।
4) मनुष्य और तिर्यंचों में औदारिक काययोग में उत्तर विक्रिया प्रारंभ करता है है इसलिए औदारिक काययोग में वै. संघा. कृति होती है, देव व नारकी में वै. मिश्र काययोग में वै. संघा कृति होती है।

मार्गणा	कृति – सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
वेदमार्गणा स्त्रीवेदी	औ. संघा, औ. संघापरि औ. परि वै संघा, वै. परि तै. का. संघापरि वै. संघापरि	असंख्यात " " " " "	लो÷असं " " " " "	लो÷असं, " सर्व " सर्व " " लो÷असं, $\frac{6}{14}$ –, सर्व लो÷असं, $\frac{6}{14}$ –, सर्व

मार्गणा	स्थान	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
पुरुषवेदी	स्त्री वेदी के समान ७ पद जानना।			
विशेष	आ. तीन पद	संख्यात	लो÷असं	लो÷असं
नपुंसकवेदी	ओ. संघा	अनन्त	सर्व	सर्व
	ओ. संघापरि	अनन्त	सर्व	सर्व
	तै. का. संघापरि	"	"	"
	ओ. परि	असंख्यात	लो÷ असं	लो÷असं, सर्व
	वै. सं	"	"	" "
	वै. परि	"	"	" "
	वै. संघापरि	"	"	" "
अपगतवेदी	ओ. परि	संख्यात	$\frac{लो}{असं}$, असंबहु, सर्व	$\frac{लो}{असं}$, असं, बहु, सर्व
	ओ. संघापरि	"	लो ÷ असं	लो÷असं
	तै. का. संघापरि	"	$\frac{लो}{असं}$, असंबहु, सर्व	$\frac{लो}{असं}$, असं. बहु. सर्व
	तै. का. परि	"	लो ÷ असं	लो÷असं
चार कषाय	ओघ के समान वि- ओ. परि	विशेष → तै. असंख्यात	का. परिशातन कृति लो÷ असं	नहीं होती। लो÷असं
अकषायी	अपगत वेद समान			
मति श्रुत अज्ञानी	ओ. संघा	अनन्त	सर्व	सर्व
	ओ. संघा परि	"	"	"
	तै. का. संघापरि	"	"	"
	ओ. परि, वै. 2 पद	असंख्यात	लो ÷ असं	लो÷असं, सर्व
	वै. संघापरि	"	"	" " $\frac{6}{14}$ —
विभंगज्ञानी	ओ. संघापरि	असं	लो÷ असं	लो÷असं, सर्व
	ओ. परि	"	"	" "
	वै. संघा, वै. परि.	"	"	" "
	वै. संघापरि	"	"	" $\frac{6}{14}$ —, सर्व
	तै. का. संघापरि	"	"	" $\frac{6}{14}$ — "

मार्गणा	सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
आभिनिबोधिक, श्रुत व अवधिज्ञानी,	औ. संघा	संख्यात	लोक ÷ असं	लो ÷ असं
	आ. २ पद	,,	,,	,,
	औ. परि	असंख्यात	,,	,, ६/१४ −
	औ. संघा-परि	,,	,,	,, ६/१४ −
	वै. संघा, वै. परि	,,	,,	,, ६/१४ −
	वै. संघापरि	,,	,,	,, ८/१४ −
	तै.का. संघापरि	,,	,,	,, ८/१४ −
मनःपर्ययज्ञानी	औ. संघापरि	संख्यात	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	औ. परि	,,	,,	,,
	वै. २ पद	,,	,,	,,
	तै. का. संघापरि	,,	,,	,,
केवलज्ञानी, केवलदर्शनी, यथाख्यातसंयम	औ. परि.	संख्यात	लो/असं, असं.बहु, सर्व	क्षेत्र के समान
	तै. का संघापरि	,,	,, ,, ,,	,,
	तै. का. परि	,,	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	औ. संघापरि	,,	,,	,,
सामायिक, छेदो	औ. संघापरि	संख्यात	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	औ. परि	,,	,,	,,
	वै. २ पद	,,	,,	,,
	तै. का. संघापरि	,,	,,	,,
	आ. २ पद	,,	,,	,,
परिहारविशुद्धि	औ. संघापरि	,,	,,	,,
सूक्ष्म साम्परायिक संयत	तै.का. संघापरि	,,	,,	,,
संयतासंयत	औ. संघापरि	असंख्यात	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	औ. परि	,,	,,	,,
	वै. २ पद	,,	,,	,,
	तै. का. संघापरि	,,		,,

मार्गणा	सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
असंयत	औ. संघा, संघापरि	अनंत	सर्व	सर्व
	औ. परि	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं, सर्व
	वै. संघा, वै. परि	"	"	" "
	वै. संघापरि	"	"	लो÷असं, $\frac{८}{१४}$-, सर्व
	तै.का. संघापरि	अनंत	सर्व	सर्व
चक्षुदर्शनी	औ. संघा	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं
	औ. संघापरि, औ. परि	"	"	" सर्व
	वै. संघा, वै. परि	"	"	" सर्व
	वै. संघापरि		"	" $\frac{८}{१४}$-, सर्व
	तै.का. संघापरि	"	"	" $\frac{८}{१४}$- सर्व
	आ. ३ पद	संख्यात	"	"
अचक्षुदर्शनी	औ. संघा, औ. संघापरि तै.का. संघापरि	अनन्त	सर्व	सर्व
	औ. परि	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं, सर्व
	वै. संघा, वै. परि	"	"	" "
	वै. संघापरि	"	"	" "
	आ. ३ पद	संख्यात	"	लो÷असं
अवधिदर्शनी	अवधिज्ञानी के समान			
कृष्ण, नील, कापोत लेश्या	औ. सं, औ. संघापरि	अनंत	सर्व	सर्व
	तै. का. संघापरि	"	सर्व	"
	औ. परि	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं, सर्व
	वै. ३ पद	"	"	" "
तेजोलेश्या	औ. संघा, आ. ३ पद	संख्यात	लो÷असं	लो÷असं
	औ. परि, औ. संघापरि	असंख्यात	लो÷असं	$\frac{३}{२८}$- "
	वै. संघा, वै. परि	"	"	" "
	वै. संघापरि	"	"	$\frac{८}{१४}$-, $\frac{९}{१४}$-,
	तै.का. संघापरि	"	"	" "

मार्गणा	सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
पद्मलेश्या	औ. संघा	संख्यात	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	आ. ३ पद	"	"	"
	औ. संघापरि, परि	असंख्यात	"	$\frac{५}{१४}$ -
	वै. संघा, वै. परि	"	"	"
	वै. संघापरि	"	"	$\frac{२}{१४}$ -
	तै. का. संघापरि	"	"	$\frac{८}{१४}$ -
शुक्ललेश्या	औ. संघा	संख्यात	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	आ. ३ पद	"	"	"
	औ. संघापरि	असंख्यात	लो ÷ असं	$\frac{६}{१४}$ -
	वै. ३ पद	"	"	$\frac{६}{१४}$ -
	औ. परि	"	$\frac{\text{लो}}{\text{असं}}$, असं. बहु, सर्व	क्षेत्र समान
	तै. का. संघापरि	"	" " "	$\frac{६}{१४}$ -, $\frac{\text{लो}}{\text{असं}}$, असं. बहु. सर्व
भव्यसिद्धिक	ओघ के समान			
अभव्यसिद्धिक	असंयत के समान			
सम्यग्दृष्टि	औ. संघा	संख्यात	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	आ. ३ पद	"	"	"
	तै. का. परि	"	"	"
	औ. परि	असंख्यात	$\frac{\text{लो}}{\text{असं}}$, असं. बहु, सर्व	" असं. बहु, सर्व
	औ. संघापरि	"	लो ÷ असं	$\frac{\text{लो}}{\text{असं}}$, $\frac{६}{१४}$ -
	वै. संघा, वै. परि	"	"	" $\frac{६}{१४}$ -
	वै. संघापरि	"	"	" $\frac{८}{१४}$ -
	तै. का. संघापरि	"	"	" " , असं बहु, सर्व
क्षायिक सम्यग्दृष्टि	औ. संघा	संख्यात	लो ÷ असं	लो ÷ असं
	आ. ३ पद, तै. का. परि	संख्यात	"	"
	औ. परि	असंख्यात	$\frac{\text{लो}}{\text{असं}}$, असं. बहु. सर्व	क्षेत्रवत्
	औ. संघापरि	"	लो ÷ असं	लो ÷ असं,
	वै. संघा, वै. परि			"

मार्गणा	सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
	वै. संघापरि	असंख्यात	लो÷असं	८/१४ −, लो/असं
	तै. का. संघापरि	”	”	८/१४ −, लो/असं, असं.बहु. सर्व
वेदकसम्यग्दृष्टि	औ. संघा, आ. ३ पद	संख्यात	लो÷असं	लो÷असं
	औ. परि, औ. संघापरि	असंख्यात	”	लो/असं, ८/१४ −
	वै. संघा. वै. परि	”	”	” ”
	वै. संघापरि	”	”	” ८/१४ −
	तै. का. संघापरि	”	”	” ८/१४ −
उपशमसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि	औ. संघापरि	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं
	औ. परि	”	”	”
	वै. संघा. वै. परि	”	”	”
	वै. संघापरि	”	”	” ८/१४ −
	तै. का. संघापरि	”	”	” ८/१४ −
सासादनसम्यग्दृष्टि	औ. संघा	असंख्यात	लो÷असं	लो/असं
	औ. संघापरि, परि	”	”	७/१४ −, लो/असं
	वै. संघा, वै. परि	”	”	७/१४ − ”
	वै. संघापरि	”	”	८/१४ ”, १२/१४ −
	तै. का. संघापरि	”	”	” ” ”
संज्ञी	औ. संघा	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं
	औ. संघापरि, परि	”	”	” सर्व
	वै. संघा. वै. परि	”	”	” सर्व
	वै. संघापरि	”	”	”, ८/१४ −, ”
	तै. संघापरि	”	”	” ८/१४ − ”
	आ. ३ पद	संख्यात	”	लो÷असं
असंज्ञी	औ. संघा, औ. संघापरि	अनन्त	सर्व	सर्व
	तै. का. संघापरि	”	”	”
	औ. परि, वै. ३ पद	असंख्यात	लो÷असं	लो/असं, सर्व

मार्गणा	सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन
आहारक	औ. संघा	अनन्त	सर्व	सर्व
	औ. संघापरि	"	"	सर्व
	तै.का संघापरि	"	"	"
	औ.परि	असंख्यात	लो÷असं	लो÷असं, सर्व
	वै.संघा_वै.परि	"	"	"
	वै.संघापरि	"	"	"
	उप. ३ पद	संख्यात	"	"
अनाहारक	औ. परि	संख्यात	लो. असं. बहु. सर्व	क्षेत्रवत्
	तै.का.परि	"	"	लो÷असं
	तै.का.संघापरि	अनन्त	सर्व	सर्व

1) स्त्रीवेद और नपुंसकवेद में आहारक शरीर का उदय नहीं होता इसलिए उन दोनों में आहारक शरीर के तीनों पद नहीं होते।

2) देव और देवियों का नीचे तीसरे नरकतक और ऊपर १६ वें स्वर्गतक विहार होता है इसलिए कुछ कम ८ घनराजू उनका स्पर्शन होता है।

3) वैक्रियिक काययोग में १३/१४ स्पर्शन - मारणान्तिक समुद्घात की अपेक्षा बताया है क्योंकि ७ वें नरक तक के नारकी तिर्यंचों में मारणान्तिक करते हैं उनकी अपेक्षा नीचे ६ राजू और भवनत्रिक और सौधर्मैशिक के देव मध्यलोक से लोकान्त में एकेन्द्रियों में मारणान्तिक समुद्घात करते हैं उसकी अपेक्षा ऊपर ७ राजू स्पर्शन होता है इसप्रकार ६+७=१३ घनराजू स्पर्शन घटित होता है।

4) केवलिसमुद्घात में औदारिक शरीर का परिशातन होता है इसलिए प्रतर समुद्घात में असंख्यात बहुभाग और लोकपूरण में सर्वलोक स्पर्शन घटित होता है।

5) पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयत सम्यग्दृष्टि अथवा संयतासंयत उत्तर विक्रिया के साथ मारणान्तिक समुद्घात १६ वें स्वर्गतक करते हैं उसकी अपेक्षा औदारिक परिशातन और वैक्रियिक के संघातन और परिशातन में कुछ कम ६ बटे चौदह भाग स्पर्शन होता है विक्रिया के बिना मारणान्तिक समुद्घात करते हैं तब औदा. संघापरि में कुछ कम ६ बटे चौदह भाग स्पर्शन होता है।

6) विभंगज्ञान में औदारिक शरीर का संघातन नहीं होता क्योंकि मिश्रकाययोग में विभंगज्ञान उत्पन्न नहीं होता। मनुष्य तिर्यंचों में उत्तर विक्रिया की अपेक्षा वैक्रियिक शरीर का संघातन विभंगज्ञान में पाया जाता है।

संयतों में औदारिक शरीर का संघातन नहीं होता।
1, 2 और चौथे गुणस्थान में ही औ॰ का संघातन होता है।
तेजोलेश्या दूसरे स्वर्गतक है अतः तेजोलेश्यावाले मनुष्य तिर्यंचों की विक्रिया के साथ मारणान्तिक समुद्घात करने पर डेढ़ घन राजू स्पर्शन होता है औ॰ परिशातन वै॰ संघातन और वै॰ परिशातन में,
पद्मलेश्यावाले 12 वें स्वर्गतक मारणान्तिक समुद्घात करते हैं अतः ५ घनराजू स्पर्शन होता है, शुक्ललेश्यावाले १६ वें स्वर्गतक मा॰ समु॰ करते हैं अतः ६ घनराजू स्पर्शन होता है।
तेज और पद्मलेश्या में विहार की अपेक्षा $\frac{८}{१४}$ स्पर्शन है नीचे तीसरे नरकतक 2 राजू ऊपर १६ वें स्वर्गतक ६ राजू।
शुक्ललेश्यावाले देव नरक में विहार नहीं करते इसलिए उनकी अपेक्षा ६ घनराजू ही स्पर्शन कहा है।
सम्यग्दृष्टी देव और नारकी मरकर मनुष्यों में ही जन्म लेते हैं इसलिए सम्यग्दृष्टि में औदारिक संघातन में संख्यात ही संख्या बतायी है।
इसी प्रकार शुभलेश्यासहित जन्म सम्यग्दृष्टि मनुष्य में ही होता है इसलिए शुभ तीन लेश्याओं में औ॰ शरीर संघातन कृतियुक्त जीवों की संख्या संख्यात ही बतायी है।
उपशम सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व में औदारिक संघातन कृति नहीं होती.
" " में वैक्रियिक संघातन कृति होती है।
विग्रहगति में अनाहारक में केवल तैजस व कार्मण की संघातनपरिशातन कृति होती है।
१३ वें गुणस्थान की अपेक्षा अनाहारक में औदा॰ परिशातन कृति है और
१४ वें " " " तै॰ का॰ परिशातन कृति है।

कालप्ररूपणा

	कृति का नाम	नाना जीव		एक जीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
ओघ	औदा. संघा.	—	सर्वकाल	एक समय	एक समय
	औदा. परि, वै. परि	—	सर्वकाल	एक समय [2]	अन्तर्मुहूर्त [1]
	औ. संघापरि	—	सर्वकाल	" " [3]	तीन पल्य – 1 समय [4]
	वै. संघा	एक समय	आवली ÷ असं. [5]	" "	दो समय [6]
	वै. संघापरि	—	सर्वकाल	" "	33 सागरोपम – 1 समय
	आ. संघा.	एक समय	संख्यात समय [7]	" "	एक समय
	आ. परि	" "	अन्तर्मुहूर्त	" "	अन्तर्मुहूर्त
	आ. संघापरि	अन्तर्मुहूर्त	"	अन्तर्मुहूर्त	"
	तै. का. परि.	"	"	"	"
	तै. का. संघापरि	—	सर्वकाल	—	अनादि अपर्यवसित अनादि सपर्यवसित

1 जब तिर्यंच व मनुष्य विक्रिया करते हैं तब अन्तर्मुहूर्त काल औदारिक शरीरका परिशातन होता है और जब विक्रिया को समेटते है तब उस वैक्रियिक शरीर का अन्तर्मुहूर्त परिशातन होता है

2 विक्रिया प्रारंभ करके 1 समय रहा और मरण हो गया तो औ. परि एक समय ही होकर छूट गया इसलिए ज.काल एक समय है और विक्रिया समेटने के बाद एक समय रहा और मरा तो वै.परि का जघन्य काल एक समय होता है।

3. विक्रिया समेटने पर एक समय रहकर मरण किया इस एक समय में औ. संघापरि होता है इसलिए औदा- संघापरि का जघन्य काल एक समय कहा है।

4. मनुष्य और तिर्यंच की उत्कृष्ट आयु तीन पल्य है। प्रथम समय में औदा. का केवल संघातन होता है शेष सर्वकाल संघापरि होता है इसलिए तीन पल्य में एक समय कम किया और इस जीवने जीवनभर विक्रिया नहीं की।

5 देव और नारकियों में निरन्तर उत्कृष्ट उत्पत्तिकाल आवली का असंख्यातवाँ भाग है इसलिए नाना जीवों की अपेक्षा वै.संघात का उत्कृष्ट काल आवली ÷ असंख्यात है।

6 किसी मनुष्य या तिर्यंच ने विक्रिया उत्पन्न की और एक समय रहकर मरा और ऋजुगति से देवों में उत्पन्न हुआ तो मनुष्य या तिर्यंच भवका अन्तिम और देवगति का प्रथम समय इसप्रकार दो समय लगातार वैक्रियिक शरीर का संघातन हुआ इसलिए वै.संघा. एक जीव का उत्कृष्ट काल दो समय कहा है।

7) आहारक शरीर की लगातार उत्पत्ति करनेवाले जीव संख्यात ही हैं अतः आ. संघात का उत्कृष्ट काल संख्यात समय कहा है।

८) आहारक शरीर को समेट कर मूल शरीर में प्रवेश करने के बाद एक समय में ही मरण हुआ तो आहारक शरीर के परिशातन का जघन्य काल एक समय सिद्ध होता है।

९) आहारक मिश्र काययोग में मरण नहीं होता इसलिए आहारक शरीर का संघापरि का जघन्य काल भी अन्तर्मुहूर्त है।

१०) तै. कार्मणका परिशातन चौदहवें गुणस्थान के प्रथम समय से अन्तिम समय तक होता है इसलिए एक जीव, नानाजीव जघन्य और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है।

११) अभव्य जीव की अपेक्षा तै. का. का संघापरि. का काल अनादि अनन्त है और भव्य जीव की अपेक्षा अनादि सान्त है। तैजस और कार्मण शरीर औदारिक- के समान पूर्वतः नष्ट होकर नया उत्पन्न नहीं होता। ये दोनों शरीर परम्परासे अनादि काल से हैं।

मार्गणा	कृति का नाम	नाना जीव		एक जीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
नरकगति	वैक्रियिक संघा	एक समय	आवली÷असं	एक समय	एक समय
	वै. संघापरि	—	सर्वकाल	१०,००० वर्ष-३ समय	३३ सागर - १ समय
	तै.का. संघापरि	—	सर्वकाल	१०,००० वर्ष	३३ सागरोपम
सब पृथिवीयों में	वै. संघा.	एक समय	आ÷असं	एक समय	एक समय
प्रथम पृथिवी	वै. संघापरि	—	सर्वकाल	१०००० वर्ष-३ समय	१ सा. - १ समय
	तै.का. संघापरि	—	सर्वकाल	१०००० वर्ष	१ सागरोपम
द्वितीय पृथिवी	वै. संघापरि	—	"	१ सागर-२ समय	३ सा. - १ समय
	तै.का. संघापरि	—	"	१ सागर +१ "	३ सा.
तृतीय पृथिवी	वै. संघापरि	—	"	३ सागर - २ समय	७ सा - १ समय
	तै. का. संघापरि	—	"	३ सागर +१ "	७ सा.
चौथी पृथिवी	वै. संघापरि	—	"	७ सा - २ समय	१० सा - १ समय
	तै. का. संघापरि	—	"	७ सा. + १ समय	१० सा.
पांचवी पृथिवी	वै. संघापरि	—	"	१० सा - २ समय	१७ सा. - १ समय
	तै. का. संघापरि	—	"	१० सा + १ समय	१७ सा
छठी पृथिवी	वै. संघापरि	—	"	१७ सा - २ समय	२२ सा - १ समय
	तै. का. संघापरि	—	"	१७ सा + १ समय	२२ सा
सातवी पृथिवी	वै. संघापरि	—	"	२२ सा - २ समय	३३ सा - १ समय
	तै. का. संघापरि	—	"	२२ सा + १ समय	३३ सा

classmate
Date
Page

1) जिस पृथिवी की जितनी जघन्य आयु है उसमें से २ समय कम करनेपर वै. संघापरि का जघन्य काल होता है। यह जीव दो मोडा लेकर उत्पन्न हुआ विग्रहगति में वैक्रि. संघापरि नहीं है और वहां जाने पर प्रथम समय मे वैक्रियक का संघातन हुआ इसप्रकार ३ समयतक संघातन परिशातन नहीं हुआ इसलिए २ समय कम किये। प्रथम पृथिवी में १०,००० वर्ष जघन्य आयु है इसलिए उसमें से २ समय किये। दूसरी पृथिवी से लेकर सातवी पृथिवीतक जघन्य आयु १ समय अधिक १ सागर, १ समय अधिक ३ सागर इत्यादी है उसमें से २ समय कम करने पर दो समय कम १ सागर जघन्य काल हुआ इसीप्रकार आगे जानना

2) वै. संघापरि. का एक जीव अपेक्षा उत्कृष्ट काल बताते समय उत्कृष्ट आयु में एक समय कम किया। इस जीवने ऋजुगति से उत्पन्न होकर प्रथम समय मे वै. संघा. किया इसलिए १ समय कम किया।

3) तै. का. संघापरि का जघन्य काल उस पृथिवी की जघन्य आयुप्रमाण और उत्कृष्ट काल उत्कृष्ट आयुप्रमाण जानना।

मार्गणा नाम	कृति का नाम	नानाजीव जघन्य	नानाजीव उत्कृष्ट	एकजीव जघन्य	एकजीव उत्कृष्ट
तिर्यंचगति	औदा. संघा	—	सर्वकाल	एक समय	एक समय
	औदा. परि, वै. परि	—	"	"	अन्तर्मुहूर्त
	औदा. संघापरि	—	"	"	३ पल्य – १ समय
	वै. संघा.	१ समय	आ ÷ असं	"	१ समय
	वै. संघापरि	—	सर्वकाल	"	अन्तर्मुहूर्त
	तै. का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभवग्रहण	असंख्यात पुद्गल परिवर्तन अनन्त
पंचेन्द्रिय, पर्याप्त पंचे, योनिनी तिर्यंच	औ. संघा, वै. संघा	१ समय	आ ÷ असं	१ समय	१ समय
	औ. परि, वै. परि	—	सर्वकाल	१ समय	अन्तर्मुहूर्त
	वै. संघापरि	—	"	"	"
	औ. संघापरि	—	"	"	३ पल्य – १ समय
	तै. का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभवग्रहण / अन्तर्मुहूर्त	३ पल्य + पूर्वकोटि पृथक्त्व (८५ पूर्वकोटि)
पंचेन्द्रिय अपर्याप्त तिर्यंच	औ. संघातन	१ समय	आ ÷ असं	१ समय	१ समय
	औ. संघापरि	—	सर्वकाल	क्षुद्रभव – ३ समय	अन्तर्मुहूर्त – १ समय
	तै. का. संघा	—	"	क्षुद्रभव	अन्तर्मुहूर्त

मार्गणा का नाम	कृति का नाम	नाना जीव		एक जीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
मनुष्य गति	औ. संघा,	१ समय	आ÷असं	१ समय	१ समय
	औ.परि.वै.परि	—	सर्वकाल	,,	अन्तर्मुहूर्त
	औ.संघापरि	—	,,	,,	३ पल्य - १ समय
	वै. संघापरि	—	,,	,,	अन्तर्मुहूर्त
	वै.संघा.,आ.संघा	१ समय	संख्यात समय	,,	१ समय
	आहा. परि,	१ समय	अन्तर्मुहूर्त	१ समय	अन्तर्मुहूर्त
	आहा. संघापरि	अन्तर्मुहूर्त	,,	अन्तर्मुहूर्त	,,
	तै.का. परि	,,	,,	,,	,,
	तै.का संघापरि	—	सर्वकाल	क्षुद्रभवग्रहण	३ पल्य + ४७ पूर्वकोटि
मनुष्य पर्याप्त	औ, वै. आ. संघा	१ समय	संख्यात समय	१ समय	१ समय
	तै.का. संघापरि	—	सर्वकाल	अन्तर्मुहूर्त	३ पल्य + २३ पूर्वकोटि
	शेष पद	मनुष्यों के	समान		
मनुष्यिनी	औ. वै. संघा	१ समय	संख्यात समय	१ समय	१ समय
	तै.का.संघापरि	—	सर्वकाल	अन्तर्मुहूर्त	३ पल्य + ७ पूर्वकोटि
	शेष पद	मनुष्यों के	समान		
मनुष्य अपर्याप्त	औ. संघा	१ समय	आ÷असं	१ समय	१ समय
	औ. संघापरि	क्षुद्रभव - ३ समय	पल्य÷असं	क्षुद्रभव-३ समय	अन्तर्मुहूर्त - १ समय
	तै.का. संघापरि	क्षुद्रभवग्रहण	,,	क्षुद्रभवग्रहण	अन्तर्मुहूर्त
देवगति, सब देव सामान्य देव	वै. संघा	१ समय	आ÷असं.	एक समय	१ समय
	वै. संघापरि	—	सर्वकाल	१०,०००वर्ष-३ समय	३३ सा. - १ समय
	तै. का. संघापरि	—	,,	१०,००० वर्ष	३३ सा.
भवनवासी	वै. संघापरि	—	,,	१०००० वर्ष-३ समय	साधिक १ सा.
	तै.का.संघापरि	—	,,	१०००० वर्ष	,,
वानव्यन्तर	वै. संघापरि	—	,,	१०००० वर्ष - ३ समय	साधिक १ पल्योपम
	तै. का. संघापरि	—	,,	१०००० वर्ष	,,
ज्योतिषी	वै. संघापरि	—	,,	पल्य/८ - ३ समय	,,
	तै.का. संघापरि	—	,,	पल्य/८	,,

मार्गणा	कृति	नाना जीव		एक जीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
सौधर्म, ऐशान	वै. संघापरि	—	सर्वकाल	साधिक १ पल्य	साधिक दो सा.
सानत्कुमार, माहेन्द्र	"	—	"	साधिक दो सा.	" ७ सा
ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर	"	—	"	साधिक ७ सा.	" १० सा.
लान्तव कापिष्ठ	"	—	"	" १० सा.	" १४ सा.
शुक्र महाशुक्र	"	—	"	" १४ सा.	" १६ सा.
शतार सहस्रार	"	—	"	" १६ सा.	" १८ सा.
	तै. का. संघापरि	—	"	स्वस्व जघन्यायु	स्वस्व उत्कृष्टायु
आनत से ९ ग्रैवेयक	वै. संघा	१ समय	संख्यात समय	१ समय	१ समय
आनत प्राणत	वै. संघापरि	—	सर्वकाल	साधिक १८ सा.	२० सा. — १ समय
आरण अच्युत	"	—	"	२० सा. — २ समय	२२ सा. — १ समय
प्रथम ग्रैवेयक	"	—	"	२२ सा — २ समय	२३ सा. — १ समय
द्वितीय ग्रैवेयक	"	—	"	२३ सा — २ "	२४ सा. — १ "
तृतीय "	"	—	"	२४ सा — २ "	२५ सा. — १ "
चतुर्थ "	"	—	"	२५ सा — २ "	२६ सा. — १ "
पंचम "	"	—	"	२६ सा — २ "	२७ सा. — १ "
छठा "	"	—	"	२७ सा — २ "	२८ सा. — १ "
सातवाँ "	"	—	"	२८ सा — २ "	२९ सा. — १ "
आठवाँ "	"	—	"	२९ सा — २ "	३० सा. — १ "
नौवाँ "	"	—	"	३० सा — २ "	३१ सा. — १ "
आनत से ९ ग्रैवेयक	तै. का. संघापरि	—	"	अपनी अपनी जघन्य आयु	अपनी अपनी उत्कृष्ट आयु
९ अधुदिश अनुत्तर	वै. संघा.	१ समय	संख्यात समय	१ समय	१ समय
९ अनुदिश	वै. संघापरि	—	सर्वकाल	३१ सा. — २ समय	३२ सा. — १ समय
	तै. का. संघापरि	—	"	३१ सा + १ समय	३२ सा.
४ अनुत्तर	वै. संघापरि	—	"	३२ सा — २ समय	३३ सा. — १ समय
	तै. का. संघापरि	—	"	३२ सा + १ समय	३३ सा.
सर्वार्थसिद्धि	वै. संघापरि	—	"	३३ सा — ३ समय	३३ सा. — १ समय
	तै. का. संघापरि	—	"	३३ सा.	३३ सा.

पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच, योनिनी तिर्यंच, मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त मनुष्यनी का उत्कृष्ट काल पूर्वकोटि पृथक्त्व और तीन पल्य है। वह इसप्रकार
पंचेन्द्रिय तिर्यंच → असंज्ञी के ८ पुवेद, ८ स्त्रीवेद, ८ नपुंसक, संज्ञी पर्याप्त के ८ पुंवेद ८ स्त्रीवेद, ८ नपुंसक, अपर्याप्त के ८ भव, पुनः असंज्ञी के ८ पु. ८ स्त्री. ८ नपुं संज्ञी के ८ नपुं. ८ स्त्री. ७ पु. - १ भोगभूमी ३ पल्य = ९५ पूर्वकोटि + ३ पल्य
पंचेन्द्रिय पर्याप्त असंज्ञी ८ नपुं, ८ स्त्री, ८ पु, संज्ञी ८ नपुं, ८ स्त्री, ७ पु. + १ भो. ३ पल्य
इसप्रकार ४७ पूर्वकोटि + ३ पल्य
मनुष्य → ८ नपुं, ८ स्त्री, ८ पुं, ८ अपर्याप्त भव, ८ नपुं, ८ स्त्री, ७ पुं. + १ भो.भू. ३ पल्य = ४७ पू.को + ३ पल्य
मनुष्य पर्याप्त → ८ नपुं, ८ स्त्री, ७ पुं. + १ भो. भू ३ पल्य = २३ पू.को + ३ पल्य
तिर्यंच योनिनी → असंज्ञी स्त्री ८, संज्ञी स्त्री ७, १ भो.भू. स्त्री ३ पल्य = १५ पू.को + ३ पल्य
मनुष्यिनी → ७ पूर्वकोटि + ३ पल्य.
सब जगह ८ का अर्थ १-१ पूर्वकोटि के ८ भव लेना

स्वर्गों में नरक के समान वै. संघापरि. के जघन्य काल और उत्कृष्ट काल का स्पष्टीकरण जानना।
सौधर्म स्वर्ग से आनतप्राणत तक जघन्य काल में २ समय कम है वह साधिक में से कम करके जो शेष रहता है वह साधिक यहाँ समझना।
इसी प्रकार उत्कृष्ट काल में उत्कृष्ट आयु में से १ समय करके जितना शेष रहता है उतना साधिक समझना।
सर्वार्थसिद्धि विमान में देवों की जघन्य आयु और उत्कृष्ट आयु ३३ सागरोपम ही है। वै. संघापरि का जघन्य काल ३ समय कम → २ मोड़ सहित जीव का और उत्कृष्ट काल १ समय कम → ऋजुगति सहित जीव का समझना।

मार्गणा	कृति	नाना जीव जघन्य	नाना जीव उत्कृष्ट	एक जीव जघन्य	एक जीव उत्कृष्ट
एकेन्द्रिय बादर एके बा.एके पर्याप्त	औ.संघा, वै.संघा	—	सर्वकाल	१ समय	१ समय
	औ.परि. वै.शेष २ पद	—	सर्वकाल	१ समय	अन्तर्मुहूर्त
	औ. संघापरि	—	,,	,,	२२ हजार वर्ष - १ स.
एकेन्द्रिय	तै.का. संघापरि	—	,,	क्षुद्रभवग्रहण	असं. पुद्गल परि.
बादर एकेन्द्रिय	तै.का.संघापरि	—	,,	,,	अंगुल ÷ असं. असं उत्स-अवसर्पिणी
बादर एके.पर्याप्त	,,	—	,,	अन्तर्मुहूर्त	संख्यात हजार वर्ष

बादर एके. व बा.एके-पर्याप्त के शेषपद एकेन्द्रिय समान जानना

classmate
Date
Page

मार्गणा	कृति	नानाजीव		एकजीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त	औ. संघा.	—	सर्वकाल	1 समय	1 समय
	औ. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव - 3 समय	अन्तर्मुहूर्त - 1 समय
	तै.का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव	अन्तर्मुहूर्त
सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सू.एके. पर्याप्त	औ. संघा		सर्वकाल	1 समय	1 समय
सूक्ष्म एके	औ. संघापरि	—	सर्वकाल	क्षुद्रभव - 4 समय	अन्तर्मुहूर्त - 1 समय
	तै. का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभवग्रहण	असंख्यात लोक
सू. एके. पर्याप्त	औ. संघापरि	—	"	अन्तर्मुहूर्त - 4 समय	अन्तर्मुहूर्त - 1 समय
	तै. का. संघापरि	—	"	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त
सू. एके अपर्याप्त	औ. संघा	—	सर्वकाल	1 समय	1 समय
	औ. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव - 4 समय	अन्तर्मुहूर्त - 1 समय
द्वी-त्री-चतु और उनके पर्याप्त	औ. संघा	1 समय	आ ÷ असं	1 समय	1 समय
द्वीन्द्रिय	औ. संघापरि	—	सर्वकाल	क्षुद्रभव - 3 समय	12 वर्ष - 1 समय
द्वीन्द्रिय पर्याप्त	"	—	"	अन्तर्मुहूर्त - 3 "	"
त्रीन्द्रिय	औ. "	—	"	क्षुद्रभव - 3 समय	49 रात्रिन्दि - 1 समय
त्रीन्द्रिय पर्याप्त	"	—	"	अन्तर्मु - 3 "	"
चतुरिन्द्रिय	"	—	"	क्षुद्रभव - 3 "	6 मास - 1 समय
चतुरिन्द्रिय पर्याप्त	"	—	"	अन्तर्मु - 3 "	"
द्वी-त्री-चतु	तै. का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव	संख्यात हजार
द्वी-त्री-चतु पर्याप्त	तै. का. संघापरि ..	—	"	अन्तर्मुहूर्त	" "
पंचेन्द्रिय, पंचे. पर्याप्त	औ. संघा	1 समय	आ ÷ असं	1 समय	1 समय
	औ. संघापरि, औ. परि, वै. 3 पद, आ. 3 पद	ओघ के समान			
	तै. का. संघापरि	—	सर्वकाल	क्षुद्रभव/अन्तर्मुहूर्त	
द्वी-त्री, चतु, पंचे. अपर्याप्त	औ. संघा.	1 समय	आ ÷ असं	1 समय	1 समय
	औ. संघापरि	—	सर्वकाल	क्षुद्रभव - 3 समय	अन्तर्मुहूर्त - 1 समय
	तै. का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव	अन्तर्मुहूर्त

विशेष * सूक्ष्म जीवों में अधिक से अधिक 3 मोड़े होते है इसलिए औ. संघापरि का जघन्य काल 4 समय कम क्षुद्रभव बताया है। विग्रहगति 3 समय + 1 औ. संघातन का कम किया।

classmate
Date
Page

मार्गणा	कृति	नाना जीव जघन्य	नाना जीव उत्कृष्ट	एकजीव जघन्य	एकजीव उत्कृष्ट
पृथिवी, जलकायिक	औ. संघा	—	सर्वकाल	1 समय	1 समय
पृथिवीकायिक	औ. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव-4समय	22,000वर्ष-1 स.
जलकायिक	"	—	"	"	7000वर्ष-1 स.
पृथिवी, जल	तै.का.संघापरि	—	"	क्षुद्रभवग्रहण	असंख्यातलोक
बा.पृ. बा.जल, बा.व.प्र और उनके पर्याप्त	औ. संघा.	—	सर्वकाल	1 समय	1 समय
बा.पृथिवी	औ. संघापरि	—	सर्वकाल	क्षुद्रभव-3स.	22000वर्ष-1 स.
बा.जल	"	—	"	"	7000वर्ष-1स
बा.वन.प्रत्येक	"	—	"	"	10,000-1 स
बा.पृ.बा.जल, बा.व.प्र.	तै.का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव	कर्मस्थिति
" " " पर्याप्त	औ. संघापरि	—	"	अन्तर्मुहूर्त-3स.	बादर के समान
	तै.का. संघापरि	—	"	अन्तर्मुहूर्त	कर्मस्थिति
बा.पृ.बा.जल, बा.तेज, बा.वायु, बा.वन, बा.नि, बा.वन प्रत्येक शरीर अपर्याप्त	औ. संघा	—	सर्वकाल	1 समय	1 समय
	औ. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव-3 स.	अन्तर्मुहूर्त-1स.
	तै.का.संघापरि	—	"	क्षुद्रभव	अन्तर्मुहूर्त
तेजकायिक वायुकायिक	औदा. संघा	—	सर्वकाल	1 समय	1 समय
बा.तेज, बा.वायु, " "	औ.परि वै.परि वै.संघापरि	—	"	"	अन्तर्मुहूर्त
" "	वै. संघातन	1 समय	आ÷असं	"	1 समय
बा.तेज; तेजकायिक	औदा. संघापरि	—	सर्वकाल	"	3 रात्रिदिन-1
बा.वायु, वायुकायिक	"	—	"	"	3000वर्ष-1 स.
तेज, वायु	तै.का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव	असंख्यात लोक
बा.तेज, बा.वायु	"	—	"	"	कर्मस्थिति
बा.तेज पर्याप्त, बा.वायु पर्याप्त	औ.वै. संघा		सर्वकाल	1 समय	1 समय
	औ.परि, वै. शेष 2 पद	—	सर्वकाल	1 समय	अन्तर्मुहूर्त
बा.तेज पर्याप्त	औ. संघापरि	—	"	1 समय	3 रात्रिदिन-1स
बा.वायु "	" "	—	"	1 समय	3000वर्ष-1स.
बा.तेज, बा.वायु "	तै.का. संघापरि	—	"	अन्तर्मुहूर्त	संख्यात हजार वर्ष

मार्गणा	कृति	नानाजीव		एकजीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
बा. वनस्पति	ओ. संघा.		सर्वकाल	1 समय	1 समय
	ओ. संघापरि	—	सर्वकाल	क्षुद्रभव-3 स.	10,000 - 1 स.
	तै.का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव	अंगु ÷ असं.
बा. वन. पर्याप्त	ओ. संघा.	—	सर्वकाल	1 समय	1 समय
	ओ. संघापरि	—	"	अन्तर्मु-1स	10000 वर्ष - 1 स.
	तै.का संघापरि	—	"	अन्तर्मुहूर्त	कर्मस्थिति
निगोद जीव	ओ. संघा	—	सर्वकाल	1 समय	1 समय
	ओ. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव-4 समय	अन्तर्मुहूर्त - 1 स
	तै.का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव	अढ़ाई पुद्गल परिवर्तन
बादर निगोद	ओ. संघा	—	सर्वकाल	1 स.	1 स.
	ओ. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव-3 समय	अन्तर्मुहूर्त - 1 समय
	तै.का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव	कर्मस्थिति
बादर निगोद पर्याप्त	ओ. संघा.	—	"	1 समय	1 समय
	ओ. संघापरि	—	"	अन्तर्मुहूर्त-1 स.	
	तै. का. संघापरि	—	"	अन्तर्मुहूर्त	संख्यात हजार वर्ष
सब के सूक्ष्म की प्ररूपणा	सू. एकेन्द्रिय समान				
त्रस की प्ररूपणा	पंचेन्द्रिय के समान				
त्रस पर्याप्त	पंचे. पर्याप्त समान				
विशेष त्रस	तै.का. संघापरि	—	सर्वकाल	क्षुद्रभव	2000 सा. + पू.को. पृ
त्रसपर्याप्त	"	—	"	अन्तर्मुहूर्त	2000 सा.

मार्गणा	कृति	नानाजीव		एकजीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
पांच मनोयोगी, पांच वचनयोगी	औ. वै. परि	—	सर्वकाल	1 समय	अन्तर्मुहूर्त
	औ. वै. तै. का. संघापरि	—	"	"	"
	आ. परि	1 समय	अन्तर्मुहूर्त	"	"
	आ. संघापरि	अन्तर्मु	"	अन्तर्मुहूर्त	"
काययोगी	औ. संघा.	—	सर्वकाल	1 समय	1 समय
	औ. परि. वै. परि	—	"	1 समय	अन्तर्मु.
	वै. संघापरि	—	"	"	"
	औ. संघापरि	—	"	"	22000 वर्ष - 1 स.
	वै. संघा	1 समय	आ÷असं	"	2 समय
	आ. संघा	1 समय	संख्यात समय	1 स.	1 "
	आ. परि.	"	अन्तर्मुहूर्त	1 स.	अन्तर्मु
	आ. संघापरि	अन्तर्मु.	"	अन्तर्मु.	"
	तै. का. संघापरि	—	सर्वकाल	"	असंख्यात पुद्गल परिवर्तन
औदारिक काययोगी	औ. संघापरि	—	सर्व	1 समय	कुछ कम 22000 वर्ष
	वै. संघा	1 समय	आ÷असं	1 "	1 समय
	औ. परि, वै. परि	—	सर्वकाल	1 समय	अन्तर्मु.
	वै. संघापरि	—	"	"	"
	आ. परि	1 स.	अन्तर्मु	1 स.	अन्तर्मु
औदारिक मिश्रकाय योग	औ. संघा	—	सर्वकाल	1 स.	1 स.
	औ. संघापरि	—	"	1 स.	अन्तर्मुहूर्त - 1 स.
	तै. का. संघापरि	—	"	1 स. कपाट समुद्घातमें	अन्तर्मुहूर्त
वैक्रियिक काय योग	वै. संघापरि तै. का. संघापरि	—	सर्वकाल	1 समय	अन्तर्मुहूर्त
वैक्रियिक मिश्र काययोग	वै. संघा	1 समय	आ÷असं	1 स.	1 स.
	वै. संघापरि	अन्तर्मुहूर्त	पल्य÷असं	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त
	तै. का. संघापरि	"	"	"	"

		जघन्य	उत्कृष्ट		
आहारक काययोग	औ.परि, आ.संघापरि	१ स.	अन्तर्मु.	१ स.	अन्तर्मु.
	तै.का.संघापरि	,,	,,	,,	,,
आहारक मिश्र	औ.परि.आह.संघापरि	अन्तर्मु.	,,	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.
	तै.का.संघापरि	,,	,,	,,	,,
	आ. संघा.	१ स.	संख्यात समय	१ स.	१ स.
कार्मण काययोग	औ. परि तै.का. संघापरि	तीन समय —	संख्यात समय सर्वकाल	तीन समय १ स.	तीन समय ३ स.

१) प्रतर और लोकपूरण समुद्घात में कार्मण काययोग है और वहाँ औदारिक शरीर का परिशातन होता है इसलिए औ.परि का एक जीव की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल ३ समय है। नाना जीव लगातार केवलिसमुद्घात करनेवाले पाये गये तो संख्यात ही होते है इसलिए नाना जीवों की अपेक्षा उत्कृष्टकाल संख्यात समय कहा है। विग्रहगति का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल ३ समय है इसलिये तै.का. संघापरि. का जघन्य काल १ स. और उत्कृष्ट काल २ स. कहा है।

२) एकेन्द्रियों में सब से उत्कृष्ट आयु बा.पृथ्वी.की २२,००० वर्ष है इसलिये काययोग औ.संघापरि. का उत्कृष्ट काल एक समय कम बाईस हजार बताया है। लगातार एकेन्द्रियों में उत्पन्न होने का काल असंख्यात पुद्गलपरावर्तन है इसलिए तै.का.संघापरि एक जीव का उत्कृष्ट काल असंख्यात पुद्गल परिवर्तन कहा है। औ.मनोयोग, वचनयोग, औदारिक काययोग, वैक्रियिक काययोग और आहारक काययोग का जघन्य काल एक समय और उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त ही है।

३) कपाट समुद्घात में औदा. मिश्र काययोग होता है उसका एक समय ही काल है इसलिए औदारिक मिश्रकाययोग में औ.संघापरि और तैजस कार्मण संघापरि का एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय कहा है।

४) वैक्रियिक मिश्रकाय योग का नाना जीवों की अपेक्षा उत्कृष्ट काल पल्य ÷ असंख्यात है अर्थात देव और नारकी में आवली के असंख्यातवें भाग तक जीवों की निरन्तर उत्पत्ती होती है फिर अन्तर पडता है उन जीवों का वै.कि.मिश्र काल समाप्त नहीं होता उसके पहले फिर आवली के असंख्यातवें भाग कालतक जीवों की निरन्तर उत्पत्ति होती है इसप्रकार पल्योपम के असंख्यातवें भाग कालतक किसी न किसी जीव का वैक्रियिक मिश्र काययोग रहता है उसके पश्चात् नियम से अन्तर पडता है।

classmate
Date
Page

मार्गणा	कृति	नानाजीव		एकजीव	
		जघन्यकाल	उत्कृष्टकाल	जघन्यकाल	उत्कृष्टकाल
वेदमार्गणा स्त्रीवेद	औ. संघा, वै. संघा	1 स.	आ ÷ असं	1 स.	1 स.
	औ. परि, वै. परि	1 अ —	आ अ सर्वकाल	1 अ "	2 स अन्तर्मु.
	औ. संघापरि	—	"	1 स.	3 पल्य − 1 स.
	वै. संघापरि	—	"	"	55 पल्य − 1 स.
	तै. का. संघापरि	—	"	" 1	पल्योपमशतपृथक्त्व
पुरुषवेद	औ. संघा	1 स.	आ ÷ असं	1 स	1 स.
	औ. परि, वै. परि	—	सर्वकाल	1 स	अन्तर्मु.
	औ. संघापरि	—	"	1 स	3 पल्य − 1 स
	वै. संघापरि	—	"	"	33 सा. − 1 स.
	वै. संघा.	1 स.	आ ÷ असं	"	2 स.
	आ. संघा	1 स	संख्यात स.	1 स	1 स.
	आ. परि	1 स	अन्तर्मुहूर्त	1 स	अन्तर्मु.
	आ. संघापरि	अन्तर्मु.	"	अन्तर्मु	"
	तै. का. संघापरि	—	सर्वकाल	अन्तर्मु.	सागरोपमशत-पृथक्त्व
नपुंसकवेद	औ. संघा.	—	सर्वकाल	1 स.	1 स.
	औ. परि. वै. परि	—	"	1 स.	अन्तर्मु.
	वै. संघा.	1 समय	आ ÷ असं	1 स.	2 स.
	वै. संघापरि	—	सर्वकाल	1 स.	33 सा − 1 स
	औ. संघापरि	—	"	1 स.	1 पूर्वकोटि − 1 स
	तै. का. संघापरि	—	"	1 स.	असंख्यात पुद्गल परिवर्तन
अपगत वेदी कषाय रहित, केवलज्ञानी केवलदर्शनी	औ. परि.	3 समय 13 वे गुण. के. स.	अन्तर्मुहूर्त 14 वे गुण.	3 स. केवली समुद्घात	अन्तर्मु. 14 वे गुण.
	औ. संघापरि	—	सर्वकाल	1 स.	कुछ कम पूर्वकोटि
	तै. का. संघापरि		"	" करण की अपेक्षा	"
	तै. का. परि	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	अन्तर्मुहूर्त	अन्तर्मु.
केवलज्ञानी. केवलदर्शनी	औ. तै. का. संघापरि	—	सर्वकाल	अन्तर्मु.	कुछ कम पूर्वकोटि

1 कोई स्त्रीवेदी उपशम श्रेणी चढ़कर अपगत वेदी हुआ पुनः उपशमश्रेणी उतरकर स्त्रीवेद का उदय प्रारंभ हुआ 1 समय रहा और मरा उसकी अपेक्षा वै. का. संघापरि. का एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय कहा है इसीप्रकार नपुंसक वेद में लगाना।

मार्गणा	कृति	नानाजीव		एकजीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
क्रोधादि ४ कषाय	औ. संघा	—	सर्वकाल	१ स.	१ स.
	वै. संघा	१ समय	आ÷असं	१ स.	२ स.
	आ. संघा	"	संख्यात स.	१ स	१ स.
	औ.परि.वै.परि	—	सर्वकाल	१ स	अन्तर्मु
	औ. संघापरि	—	"	१ स.	"
	वै.तै.का. संघापरि	—	"	"	"
	आ. संघापरि	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.
मति,अज्ञानी, श्रुत, ज्ञानी	औ. संघा	—	सर्वकाल	१ स.	१ स.
	वै. संघा	१ समय	आ÷असं	"	२ स.
	औ.परि. वै. परि	—	सर्वकाल	१ स.	अन्तर्मु.
	औ. संघापरि	—	"	१ स	३ पल्य - १ स
	वै. संघापरि	—	"	१ स	३३ सा - १ स
	तै.का. संघापरि	—	"	सादि सान - अन्तर्मु अनादि अनन्त — अभव्य जीव का अनादि सान भव्य जीव	कुछ कम अर्ध पुद्गलपरिवर्तन
विभंगज्ञानी	औ.परि. वै.परि	—	सर्वकाल	१ स.	अन्तर्मु.
	वै. संघा	१ स.	आ÷असं	१ स.	१ स.
	औ. संघापरि	—	सर्वकाल	१ स.	अन्तर्मु.
	वै. तै.का. संघापरि	—	"	१ स.	कुछ कम ३३ सा.
आभिनिबोधिक,श्रुत, अवधिज्ञानी अवधिदर्शनी	औदा. संघा,	१ समय	संख्यात स.	१ स.	१ स.
	आ. संघा	"	"	"	"
	औ. परि. वै.परि	—	सर्वकाल	१ स	अन्तर्मु.
	वै. संघा.	१ समय	आ÷असं	१ स	२ स.
	औ. संघापरि	—	सर्वकाल	१ स	३ पल्य - १ स
	वै. संघापरि	—	"	१ स	३३ सा - १ स
	आ. संघापरि	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.
	तै.का. संघापरि	—	सर्वकाल	"	कुछ अधिक ६६ सा.

विशेष व स्पष्टीकरण — उपशम सम्यक्त्व का काल एक समय शेष रहनेपर उपशम सम्यक्त्व से च्युत होकर सासादन को प्राप्त हुआ उसके विभंगज्ञान का जघन्य काल एक समय बनता है।

मार्गणा	कृति का नाम	नाना जीव		एक जीव	
		जघन्यकाल	उत्कृष्टकाल	जघन्यकाल	उत्कृष्टकाल
मनःपर्ययज्ञान	औ. परि वै. परि	—	सर्वकाल	१ स.	अन्तर्मु.
	वै. संघा	१ समय	संख्यात स.	१ स.	१ स.
	वै. संघापरि	—	सर्वकाल	१ स.	अन्तर्मु.
	औ. संघापरि	—	"	१ स.	कुछ कम पूर्वकोटि
	तै. का. संघापरि	—	"	अन्तर्मु.	"
संयत व सामा. छेदो. संयत विशेष	मनःपर्ययज्ञान के	समान			
	आ. संघा.	१ समय	संख्यात स.	१ स.	१ स.
	आ. परि.	१ स.	अन्तर्मु.	१ स.	अन्तर्मु.
	आ. संघापरि	अन्तर्मु.	"	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.
संयत	तै. का. परि	"	"	"	"
सामा. छेदो. संयत	तै. का. संघापरि	—	सर्वकाल	१ स.*	कुछ कम पूर्वकोटि वर्ष
परिहार विशुद्धि संयत	औ. संघापरि	—	सर्वकाल	अन्तर्मु.	कुछ कम पूर्वकोटि
	तै. का. संघापरि	—	"	अन्तर्मु.	"
सूक्ष्मसांपरायिक संयत	औ. संघापरि	१ स.	अन्तर्मु.	१ स.	अन्तर्मु.
	तै. का. संघापरि	१ स.	अन्तर्मु.	"	"
यथाख्यातविहार शुद्धि संयत	औ. परि	३ स.	अन्तर्मु.	३ स.	अन्तर्मु.
	औ. संघापरि		सर्वकाल	१ स. मरण अपेक्षा	कुछ कम पूर्वकोटि
	तै. का. संघापरि		"	१ स. मरण अपेक्षा	"
	तै. का. परि	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.
संयतासंयत	औ. परि.	—	सर्वकाल	१ स.	अन्तर्मु.
	औ. संघापरि	—	"	१ स.	कुछ कम पूर्वकोटि
	तै. का. संघापरि	—	"	१ स.	"
	वै. संघा.	१ समय	आ÷असं	१ स.	१ स
	वै. परि.	—	सर्वकाल	१ स.	अन्तर्मु.
	वै. संघापरि	—	"	१ स.	"

* उपशम श्रेणी से उतरकर ९वे. गुणस्थान को प्राप्त होने पर एक समय पश्चात् मरण को प्राप्त हुआ उसकी अपेक्षा सा. छेदो. का तै. का. संघापरि का १ समय काल है।

मार्गणा	कृति	नानाजीव जघन्य	नानाजीव उत्कृष्ट	एकजीव जघन्य	एकजीव उत्कृष्ट
असंयत	औ. संघात	—	सर्वकाल	१ स	१स.
	वै. संघा.	१ स.	आ÷असं	१ स	२स.
	औ.परि. वै.परि	—	सर्वकाल	१ स.	अन्तर्मु.
	वै. संघापरि	—	"	१ स.	३३सा-१स.
	औ. संघापरि	—	"	१ स.	३ पल्य-१स.
	तै.का. संघापरि	—	"	अनादि अनन्त →	अभव्य
				अनादि सान्त →	भव्य
				सादि सान्त→अन्तर्मु	कुछ कम अर्धपुद्गल परिवर्तन
चक्षुदर्शनी	औ. संघा.	१समय	आ÷असं	१स	१स.
	वै. संघा	"	"	१ स	२स.
	औ.परि. वै.परि	—	सर्वकाल	१ स.	अन्तर्मु.
	वै. संघापरि	—	"	१ स.	३३सा-१स.
	औ. संघापरि	—	"	१ स.	३ पल्य-१स.
	आहा. २ पद	ओघवत्			
	तै.का. संघापरि	—	"	अन्तर्मु.	दो हजार सागर.
अचक्षुदर्शनी	ओघसमान				
कृष्ण,नील,कापोत लेश्या	औदा. संघा.	—	सर्वकाल	१स.	१स.
	औ.परि, वै.परि	—	"	१ स.	अन्तर्मु.
	औ. संघापरि	—	"	१ स.	"
	वै. संघा	१ स.	आ÷असं	१ स.	"
कृष्ण	वै. संघापरि	—	सर्वकाल	१ स.	३३सा.-१स.
नील	"	—	"	१स	१७ सा.-१स.
कापोत	"	—	"	१ स.	७ सा.-१स.
कृष्ण	तै.का. संघापरि	—	"	अन्तर्मु.	कुछ अधिक ३३सा.
नील	"	—	"	"	कुछ अधिक १७ सा.
कापोत	"	—	"	"	" ७ सा.
तेज व पद्मलेश्या	औदा. संघा	१ समय	संख्यात स.	१ स	१स.
	अ. संघा	१ स.	"	"	"

मार्गणा	कृति	नानाजीव जघन्य	नानाजीव उत्कृष्ट	एकजीव जघन्य	एकजीव उत्कृष्ट
तेज व पद्मलेश्या	औ.परि. वै.परि	—	सर्वकाल	1 स.	अन्तर्मु
	वै.संघा	1 समय	आ ÷ असं	1 स	2 स.
	औ. संघापरि	—	सर्वकाल	1 स.	अन्तर्मु.
तेजो	वै. संघापरि	—	"	1 स.	कुछ अधिक दो सागर
	तै.का. संघापरि			अन्तर्मु	"
पद्म	वै. संघापरि	—	"	1 स	कुछ अधिक अठारह
	तै.का. संघापरि	—	"	अन्तर्मु.	"
तेजो. पद्म	आ. परि	1 स.	अन्तर्मु	1 स.	अन्तर्मु.
	आ. संघापरि	अन्तर्मु	"	अन्तर्मु	"
शुक्ललेश्या	औ. संघा	1 स.	संख्यात स.	1 स	1 स
	आ. संघा	1 स.	"	1 स	1 स.
	वै. संघा	1 स.	आ ÷ असं	1 स	2 स
	औ.परि.वै.परि	—	सर्वकाल	1 स.	अन्तर्मु
	औ. संघापरि	—	सर्वकाल	1 स.	कुछ कम पूर्वकोटि 13वें गुण. अपेक्षा
	वै. संघापरि	—	"	1 स.	33 सा. – 1 समय
	आ.परि	1 स.	अन्तर्मु	1 स.	अन्तर्मु.
	आ. संघापरि	अन्तर्मु	"	अन्तर्मु	"
	तै.का. संघापरि	—	सर्वकाल	"	कुछ अधिक 33 सा.
भव्यसिद्धिक	ओघ के समान				
अभव्यसिद्धिक	औ. संघा	-	सर्वकाल	1 स	1 स.
	वै. संघा	1 स	आ ÷ असं	1 स	2 स
	औ.परि.वै.परि	—	सर्वकाल	1 स.	अन्तर्मु.
	वै.संघापरि	—	"	1 स.	33 सा – 1 स
	औ. संघापरि	—	"	1 स.	3 पल्य – 1 स
	तै.का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव	अनादि अपर्यवसित
सम्यग्दृष्टि विशेष	अवधिज्ञानी के	समान			
	तै.का. परि	अन्तर्मु.	अन्तर्मु	अन्तर्मु	अन्तर्मु.
क्षायिक सम्यग्दृष्टि विशेष	के	समान			
	तै.का. संघापरि	—	सर्वकाल	अन्तर्मु.	कुछ अधिक 33 सा.

मार्गणा	कृति	नानाजीव		एकजीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
वेदक सम्यग्दृष्टि	औ. संघा	1 स.	संख्यात स.	1 स.	1 स
	आ. संघा	1 स.	,,	1 स.	1 स
	वै. संघा	1 स.	आ÷असं	1 स.	2 स.
	औ. परि. वै. परि	—	सर्वकाल	1 स.	अन्तर्मु
	वै. संघापरि		,,	1 स.	33 सा – 1 स
	औ. संघापरि	—	,,	1 स.	3 पल्य. कुछ कम
	तै. का. संघापरि	—	,,	अन्तर्मुहूर्त	66 सा.
	आ. परि	1 स.	अन्तर्मु.	1 स.	अन्तर्मु
	आ. संघापरि	अन्तर्मु.	,,	अन्तर्मु.	,,
उपशम सम्यग्दृष्टि	औ. वै. परि	1 स.	पल्य÷असं	1 स.	अन्तर्मु.
	औ. वै. संघापरि	1 स.	,,	1 स.	,,
	वै. संघा	1 स.	आ÷असं	1 स.	2 स.
	तै. का. संघापरि	अन्तर्मु.	पल्य÷असं.	अन्तर्मु	अन्तर्मु.
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	उपशम सम्यग्दृष्टि के समान जानना				
विशेष	वै. संघा	1 स	आ÷असं.	1 स.	1 स.
सासादन सम्य	औ. संघा	1 स.	आ÷असं	1 स.	1 स.
	औ. परि, वै. परि	1 स	पल्य÷असं	1 स.	अन्तर्मु
	औ. वै. तै. का. संघापरि	1 स.	,,	1 स.	6 आवली
मिथ्यादृष्टि	असंयत के समान				
मिथ्या॰					
संज्ञी	पुरुषवेदी के समान				
असंज्ञी	औ. संघा	—	सर्वकाल	1 स.	1 स.
	वै. संघा	1 स	आ÷असं	1 स.	1 स.
	औ. परि. वै. परि	—	सर्वकाल	1 स.	अन्तर्मु
	वै. संघापरि	—	,,	1,,	,,
	औ. संघापरि	—	,,	1 स.	पूर्वकोटि – 1 स
	तै. का संघापरि	—	,,	क्षुद्रभव	असं. पुद्गल परिवर्तन

मार्गणा	कृति	नानाजीव		एकजीव	
		जघन्यकाल	उत्कृष्ट काल	जघन्य	उत्कृष्ट काल
आहारी	औ. संघा	—	सर्वकाल	1 स.	1 स.
	वै. संघा	1 स.	आ. ÷ असं.	1 स.	2 स.
	औ. परि, वै. परि	—	सर्वकाल	1 स.	अन्तर्मु
	वै. संघापरि	—	"	1 स.	33 सा - 1 स.
	औ. संघापरि	—	"	1 स.	3 पल्य - 1 स.
	तै. का. संघापरि	—	"	क्षुद्रभव - 3 स. 1*	अंगुल ÷ असं 2* उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी
अनाहारी	औ. परि	3 स.	संख्यात समय	3 स.	अन्तर्मु.
	तै. का. परि	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	13 वे. गुण. अन्तर्मु	14 वे गुण. अन्तर्मु.
	तै. का. संघापरि	—	सर्वकाल	1 स.	3 समय.

स्पष्टीकरण

1* किसी जीव ने 3 विग्रह सहित क्षुद्रभव ग्रहण किया उसका आहारक का जघन्य काल 3 समय कम क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण होता है पुन: उसने दूसरा भव विग्रह सहित लिया।

2* कोई जीव लगातार ऋजुगति से अनेक भव धारण किये तो ज्यादा से ज्यादा अंगुल के असंख्यातवे भागप्रमाण असं. उत्सर्पिणी अवसर्पिणी तक ग्रहण कर सकता है उसके पश्चात् नियम से विग्रहसहित भव धारण करेगा तब अनाहारक होगा। इसलिए आहारक का उत्कृष्ट काल अंगु ÷ असं उत्सर्पिणी अवसर्पिणी प्रमाण है।

प्रतर और लोकपूरण समुद्घात में 3 समयतक जीव अनाहारक होता है और उस समय औदारिक शरीर का परिशातन होता है इसलिए अनाहारक मार्गणा में औ. परि का जघन्य काल 3 समय कहा है।

अन्तरानुगम

ओघ	कृति	नानाजीव			एकजीव	
			जघन्य अन्तर	उत्कृष्ट	जघन्य अन्तर	उत्कृष्ट अन्तर
	औ. संघा.	निरन्तर	—	—	क्षुद्रभव – ४ स.	३३ सा + १ पू. को + १ स.
	औ. परि, वै. परि	"	—	—	अन्तर्मु.	अनन्त असंख्यात पुद्‌गल परि.
	वै. संघापरि	"	—	—	१ स.	"
	औ. संघापरि	"	—	—	१ स.	३३ सा + अन्तर्मु + ३ स.
	वै. संघा.	—	१ स.	अन्तर्मु.	१ स.	अनन्त (असं. पुद्. परि)
	आ. ३ पद	—	१ स.	वर्षपृथक्त्व	अन्तर्मु.	कुछ कम अर्ध पुद्. परि
	तै. का. संघापरि	निरन्तर	—	—	निरन्तर	
	तै. का. परि	—	१ स.	छह मास	अन्तर नहीं	

औ. संघा जघन्य अन्तर 1) किसी जीवने प्रथम क्षुद्रभव ३ मोडे सहित ग्रहण किया फिर चौथे समय में औदारिक संघातन किया उसके पश्चात् अन्तर प्रारंभ हुआ पश्चात् ऋजुगति से दूसरा भव धारण किया प्रथम समय में ही औ. संघा. किया तब उस जीव की अपेक्षा औ. संघातन का अन्तर ४ समय कम क्षुद्रभव प्रमाण होता है।

औ. संघा उ. अन्तर 2) किसी जीव ने ऋजुगति से मनुष्य भव धारण किया प्रथम समय में ही औदारिक शरीर का संघातन किया दूसरे समय से अन्तर प्रारंभ हुआ पूर्वकोटि वर्षतक जीवित रहकर सर्वार्थसिद्धि में 33 सागर आयु लेकर उत्पन्न हुआ वहाँ से च्युत होकर 2 मोड़ावाली विग्रहगति से मनुष्य हुआ तीसरे समय में औ. शरीर का संघातन किया उस जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर एक समय अधिक पूर्वकोटि से संयुक्त ३३ सा. होता है। औ. संघा १ अन्तर प्रारंभ पूर्वकोटि-१ देव ३३ सागर 2 विग्रह अंतरपूर्ण औ. संघा = प्रथम पूर्वकोटि में १ समय कम है उसमें आगे के दो समय मिलाने पर पूर्वकोटि अधिक एक समय हुआ।

औ. परि वै. परि ज. अन्तर 3) एकबार विक्रिया करके समेटने पर अन्तर्मुहूर्त बाद दूसरी बार विक्रिया की तब दो विक्रिया के बीच में औदारिक परिशातन का अंतर होता है और दूसरी विक्रिया का काल वै. परि. का अंतर होता है।

वै. संघापरि ज. अन्तर 4) कोई मनुष्य या तिर्यंच विक्रिया पूर्ण करने के पश्चात् तुरत मरा उसके बाद ऋजुगति से देव या नारकी हुआ उसके भव के प्रथम समय में वै. संघातन किया दूसरे समय से वै. संघापरि प्रारंभ हुआ उसकी अपेक्षा वैक्रियिक संघातनपरिशातन का जघन्य अन्तर एक समय होता है।

प्रथम विक्रिया का काल – वैक्रि. परिशातन काल | द्वितीय विक्रिया | वैक्रियिक परि. काल
औ. परिशातन काल – औ. परि. अन्तर | वै. परि. का अनन्तर औ. परि. काल | औ. परि. अन्तर

वै. ३ पदों का उत्कृष्ट अन्तर 5) एकेन्द्रिय पर्याय का उत्कृष्ट काल ही वै. ३ पदों का उत्कृष्ट अन्तर होता है। इतने काल में जीव पंचे. तिर्यंच, मनुष्य एके. वा. तेज वायुकायिक या देव नारकी में उत्पन्न नहीं हुआ

औ. संघापरि ज. अन्तर — किसी जीवने
६) तिर्यंच या मनुष्य भव के अंतिम समय में औ. संघापरि किया ऋजुगति से पुन: मनुष्य या तिर्यंच हुआ प्रथम समय में औ. संघातन किया दूसरे समय से औ. संघापरि प्रारंभ हुआ। उस जीव की अपेक्षा औ. संघापरि का जघन्य अन्तर एक समय घटित होता है।

औ. संघापरि उ. अन्तर — ७) औ. संघापरि का उत्कृष्ट अंतर →

मनुष्यभव के अंतिम अन्तर्मु- औ. संघापरि → उत्तर विक्रिया → ; वै. नरकमें नारकी → विग्रह → औ. संघा – औ. संघापरि
अंतर अन्तर्मुहूर्त + ३३ सा. + २ स + १ स =

उत्तर विक्रिया में केवल औ. परिशातन होता है इसलिए मनुष्य पर्याय का अंतिम अन्तर्मुहूर्त औ. संघातन परिशातन का अंतर होता है।

वै. संघा जघन्य अन्तर — ७) किसी मनुष्य तिर्यंचने विक्रिया करके प्रथम समय में वै. संघा. किया। दूसरे समय में वै. संघापरि करके मरा। ऋजुगति से देव या नारकी होकर प्रथम समय में वै. संघा. किया उसकी अपेक्षा वै. संघा का अन्तर १ समय है।

आ. उ. अन्तर — ८) किसी भी मुनिराज ने आहारक शरीर उत्पन्न नहीं किया ऐसा अधिक से अधिक वर्षपृथक्त्व काल पाया जा सकता है। इसलिए आहारक शरीर का उत्कृष्ट अन्तर नाना जीव की अपेक्षा वर्षपृथक्त्व कहा है।

९) चौदहवें गुणस्थान का उत्कृष्ट अन्तर ६ मास है इसलिए नाना जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर छह मास है।

१०) तैजस कार्मण का संघापरिशातन अनादिकाल से लेकर १२ वे गुणस्थान तक निरन्तर होता है इसलिए उसका अंतर नहीं है।

आगे अंतर घटित करते समय यह ध्यान रखना की उस मार्गणा का अभाव न करके उसके निरन्तर काल में ही अंतर घटित करना।

मार्गणा	कृति	नानाजीव			एकजीव		
		निरन्तर	जघन्य	उत्कृष्ट		जघन्य	उत्कृष्ट
नरकगति नारकी	वै. संघातन	—	१ स.	२४ मुहूर्त	—	अंतर नही	अंतर नहीं
	वै. तै. का. संघापरि	×	×	×	×	×	×
प्रथम पृथिवी	वै. संघा	×	१ स.	४८ मुहूर्त		×	×
द्वि. पृथिवी	”	×	१ स	१ पक्ष		×	×
तृ. ”	”		१ स.	१ मास		×	×
चौ. ”	”		१ स.	२ मास		×	×
पां. ”	”		१ स.	४ मास		×	×
छ. ”	”		१ स.	६ मास		×	×
सा. ”	”		१ स.	१२ मास		×	×

अन्तर प्ररूपणा

मार्गणा	कृति	नानाजीव जघन्य	नानाजीव उत्कृष्ट	एकजीव जघन्य	एकजीव उत्कृष्ट
तिर्यंच	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव – ४ स.	पूर्वकोटि + १ स.
	औ.परि, वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	अनन्त (असं. पुद्ग. परि)
	वै. संघापरि	×	×	"	"
	वै. संघा	१ स.	अन्तर्मु.	"	"
	औ. संघापरि	×	×	१ स.	३ स. + अन्तर्मु.
	तै. का. "	×	×	×	×
पंचे तिर्यंच	औ. संघा	१ स.	अन्तर्मु.	क्षुद्रभव – ३ स.	पूर्वकोटि + १ स.
पर्याप्त पंचे. तिर्यंच, तिर्यंच योनिनी	"	१ स	२४ मुहूर्त	अन्तर्मु – ३ स.	"
पंचेन्द्रियादि तीन तिर्यंच	औ.परि, वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	पूर्व.कोटि पृथक्त्व + ३ पल्य – ९५ पू.को.
	वै. संघापरि	×	×	"	"
	वै. सं	१ स	अन्तर्मु	"	"
	औ. संघापरि	×	×	१ स.	अन्तर्मु. + ३ स.
	तै.का. संघापरि	×	×	×	×
पंचे. ति. अपर्याप्त	औ. संघा	१ स.	अन्तर्मु.	क्षुद्रभव – ३ स.	अन्तर्मुहूर्त + १ स.
	औ. संघापरि	×	×	१ स	३ स
	तै.का. संघापरि	×	×	×	×
मनुष्य	औ. संघा	१ स.	अन्तर्मु.	क्षुद्रभव – ३ स.	पूर्वकोटि + १ स.
मनुष्य पर्याप्त मनुष्यिनी	औ. संघा	१ स	२४ मुहूर्त	अन्तर्मु – ३ स	"
मनुष्यादि ३	औ.परि, वै.परि	×	×	अन्तर्मु	पूर्वकोटिपृथक्त्व + ३ पल्य ४७ पू.को / २३ पू.को / ७ पू.को
	वै. संघापरि	×	×	"	" " "
	वै. संघा	१ स.	अन्तर्मु	"	" " "
	औ. संघापरि	×	×	१ स.	अन्तर्मु. + ३ स.
	आ. ३ पद	१ स.	वर्षपृथक्त्व	अन्तर्मुहूर्त	पूर्वकोटिपृथक्त्व
मनुष्यिनी	तै.का. परि	१ स.	वर्षपृथक्त्व	×	×
मनुष्य पर्याप्त	"	"	६ मास	×	×
मनुष्य अपर्याप्त	औ. संघा	१ स.	पल्य ÷ असं	क्षुद्रभव – ३ समय	अन्तर्मुहूर्त + १ स
	औ. संघापरि	१ स.	पल्य ÷ असं	१ स.	३ स.
	तै.का. संघापरि	१ स.	"	×	×

अन्तर

मार्गणा	कृति	नानाजीव जघन्य	नानाजीव उत्कृष्ट	एकजीव जघन्य	एकजीव उत्कृष्ट
देव	वै. संघा	1 स	24 मुहूर्त	×	×
	वै.तै.का.संघापरि	×	×	×	×
भवनत्रिक	वै. संघा.	1 स	48 मुहूर्त	×	×
सौधर्म, ऐशान	"	"	1 पक्ष	×	×
सानत्कुमार, माहेन्द्र	"	"	1 मास	×	×
ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर	"	"	2 मास	×	×
ला. का.	"	"	"	×	×
शु. महा.	"	"	4 मास	×	×
श. सह.	"	"	"	×	×
आनत प्राणत आरण अच्युत	"	"	6 मास	×	×
9 ग्रैवेयक	"	"	12 मास	×	×
अनुदिश 4 अनुत्तर	"	"	वर्षपृथक्त्व	×	×
सर्वार्थसिद्धि	"	"	पल्य÷संख्यात	×	×
एकेन्द्रिय	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव−4 स	22000 वर्ष+1 समय
एकेन्द्रिय बादर एके	औ.परि, वै.परि	×	×	अन्तर्मुहूर्त	पल्य÷ असं.
	वै. संघापरि	×	×	"	"
	औ. संघापरि	×	×	1 स.	अन्तर्मु+1 स.
	वै. संघा.	1 स.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.	पल्य÷असं.
बादर एकेन्द्रिय	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव. −3 स.	22000 वर्ष+1 स.
बादर एके. पर्याप्त	औ. संघा	×	×	अन्तर्मु− 3 स.	22000 वर्ष+1 स.
	औ.परि.वै. परि	×	×	अन्तर्मु.	संख्यात हजार वर्ष
	वै. संघापरि	×	×	"	"
	वै. संघा.	1 स.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु	"
	औ. संघापरि	×	×	1 स.	अन्तर्मु+1 स.
बा. एके अपर्याप्त	औ. संघा.	×	×	क्षुद्रभव − 3 स.	अन्तर्मु + 1 स
	औ. संघापरि	×	×	1 स. (ऋजुगति)	3 स. (2 मोड़ासहितगति)
	तै.का. संघा परि	×	×	×	×

classmate
Date
Page

अन्तर प्ररूपणा

मार्गणा	कृति	नानाजीव जघन्य	नानाजीव उत्कृष्ट	एकजीव जघन्य	एकजीव उत्कृष्ट
सूक्ष्म एकेन्द्रिय सू. एके. अप.	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव − ४ स.	अन्तर्मु + २ स. *
	औ. संघापरि	×	×	१ स.	४ स.
सू. एके पर्याप्त	औ. संघा	×	×	अन्तर्मु − ४ स	अन्तर्मु + २ स.
	औ. संघापरि	×	×	१ स.	४ स.
द्वीन्द्रिय	औ. संघा	१ स	अन्तर्मु.	क्षुद्रभव − ३ स.	१२ वर्ष + १ स.
द्वीन्द्रिय पर्याप्त	"	१ स	२४ मुहूर्त	अन्तर्मु − ३ स.	"
त्रीन्द्रिय	"	१ स	अन्तर्मु.	क्षुद्रभव − ३ स.	४९ रात्रि दिवस + १ स.
त्रीन्द्रिय पर्याप्त	"		२४ मुहूर्त	अन्तर्मु − ३ स	"
चतुरिन्द्रिय	"		अन्तर्मु.	क्षुद्रभव − ३ स	छह मास + १ स.
चतु. पर्याप्त	"		२४ मुहूर्त	अन्तर्मु − ३ स	
द्वी-त्री-चतु. उनके पर्याप्त	औ. संघापरि	×	×	१ स.	३ स.
द्वी. त्री. चतु. अपर्याप्त पंचे. अपर्याप्त	औ. संघा	१ स.	अन्तर्मु.	क्षुद्रभव − ३ स	अन्तर्मु + १ स.
	औ. संघापरि	×	×	१ स.	३ स.
पंचेन्द्रिय	औ. संघा	१ स.	अन्तर्मु.	क्षुद्रभव − ३ स	३३ सा + १ पू. को. + १ स
पंचे. पर्याप्त	"	१ स	२४ मुहूर्त	अन्तर्मु − ३ स	"
पंचेन्द्रिय	औ. परि. वै. परि	×	×	अन्तर्मु.	१ हजार सा.
पंचे. पर्याप्त	" "	×	×	"	सागरो शत पृ + पू. को. पृ.
पंचे, पंचे. पर्याप्त	औ. संघापरि	×	×	१ स.	३३ सा. + अन्तर्मु + २ स
" "	वै. संघा	१ स.	अन्तर्मु.	१ स.	३३ सा. + पू. को. पृ + ३ पल्य + १ स
" "	वै. संघापरि	×	×	१ स.	पू. को. पृ + ३ पल्य
पंचेन्द्रिय	आ. ३ पद	१ स.	वर्षपृथक्त्व	अन्तर्मु	१ हजार सागरोपम
पंचे. पर्याप्त	आ. ३ पद	"	"	अन्तर्मु	पू. को. पृ + सा. शत. पृ.

* सू. एकेन्द्रिय की और अपर्याप्त जीव की जघन्य आयु क्षुद्रभव है और उत्कृष्ट आयु उससे बड़ा अन्तर्मुहूर्त है। ऋजुगति प्र. स. औदा संघा ← अन्तर → दूसरा भव ३ मोड़ा
अन्तर्मुहूर्त − १ स + ३ समय.
४ थे समय में औदा संघा अन्तर समाप्त = (अन्तर्मुहूर्त − १) + ३ = अन्तर्मुहूर्त + २ समय

पंचेन्द्रिय में वै. संघा का उत्कृष्ट अन्तर.

33 सागर की आयु लेकर नरक में उत्पन्न हुआ. प्रथम समय में वै. संघा किया. दूसरे समय से अंतर प्रारंभ. 33 सागर पूर्ण करके वहाँ से निकलकर मनुष्य और तिर्यंचों में पूर्वकोटि पृथक्त्व काल तक भ्रमण करके भोगभूमि में 3 पल्य की आयु लेकर उत्पन्न हुआ बीच में कहीं पर विक्रिया नहीं की वहाँ से निकलकर स्वर्ग में दो मोड़ा लेकर उत्पन्न हुआ उसके 33 सा + पू.को.पृ + 3 पल्य + 1 स उत्कृष्ट अन्तर होता है।

मार्गणा	कृति	नानाजीव		एकजीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
पृथिवी,	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव - 4 स.	22000 वर्ष + 1 स.
जलकायिक	"	×	×	"	7000 वर्ष + 1 स.
पृथ्वी, जल	औ. संघापरि	×	×	1 स	4 स
बादर पृथिवी	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव - 3 स	22000 वर्ष + 1 स.
बादर जल	"	×	×	"	7000 वर्ष + 1 स.
बादर पृथ्वी जल	औ. संघापरि	×	×	1 स	3 स
बादर पर्याप्त पृथ्वी	औ. संघा	1 स.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु - 3 स.	22000 वर्ष + 1 स.
" " जल	"	1 स	"	"	7000 वर्ष + 1 स.
बा. वन. प्रत्येक	औ. संघा.	×	×	क्षुद्रभव - 3 स	10000 वर्ष + 1 स
बा. वन. पर्या. प्रत्ये	"	1 स.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु - 3 स	" "
तेजकायिक	औ. संघा.	×	×	क्षुद्रभव - 4 स	3 रात्रिदिन + 1 स.
वायुकायिक	"	×	×	"	3000 वर्ष + 1 स.
तेज, वायु	औ. परि, वै. परि	×	×	अन्तर्मु.	पल्य ÷ असं.
बादर तेज, बादर वायु.	वै. संघापरि	×	×	"	"
उनके पर्याप्त	वै. संघा	1 स	अन्तर्मु	"	"
	औ. संघापरि	×	×	1 स	अन्तर्मुहूर्त + 3 स.
बादर तेज	औ. संघा.	×	×	क्षुद्रभव - 3 स	3 रात्रिदिन + 1 स.
बादर जल	"	×	×	"	3000 वर्ष + 1 स.

अंतर प्ररूपणा

मार्गणा	कृति	नानाजीव जघन्य	नानाजीव उत्कृष्ट	एकजीव जघन्य	एकजीव उत्कृष्ट
बादर पर्या. तेज	औ. संघा	१ स	२४ मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त-३स.	३ रात्रिदिन + १ स
" " जल	"	"	"	"	३००० वर्ष + १ स.
बा.पृ., अ., तेज, वायु, बा. वन, बादर नि., बा.प्र.वन. अपर्याप्त	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव - ३ स.	अन्तर्मु + १ स
	औ. संघापरि	×	×	१ स	३ स.
वनस्पति	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव - ४ स.	१०००० वर्ष + १ स.
	औ. संघापरि	×	×	१ स	४ स.
बा. वनस्पति	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव - ३ स	१०००० वर्ष + १ स
	औ. संघापरि	×	×	१ स	३ स
निगोद जीव	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव - ४ स.	अन्तर्मु + १ स.
	औ. संघापरि	×	×	१ स	४ स.
बादर निगोद जीव	औ. संघा.	×	×	क्षुद्रभव - ३ स	अन्तर्मु + १ स
	औ. संघापरि	×	×	१ स	३ स.
बादर निगोद पर्याप्त	औ. संघा	×	×	अन्तर्मुहूर्त - ३ स	अन्तर्मु + १ स
	औ. संघापरि	×	×	१ स	३ स.
सब सूक्ष्म	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव - ४ स	अन्तर्मु + २ स
	औ. संघापरि	×	×	१ स.	४ स.
त्रस	औ. संघा	१ स	अन्तर्मु	क्षुद्रभव - ३ स	३३ सा. + १ पू.को. + १ स
त्रसपर्याप्त	"	१ स	२४ मुहूर्त	अन्तर्मु - ३ स.	"
त्रस, त्रसपर्याप्त	औ. संघापरि	×	×	१ स.	३३ सा. + १ अन्तर्मु + ३ स
" "	वै. संघा	१ स.	अंतर्मु	१ स	३३ सा + पू.को. पृ + ३ पल्य + १ स.
" "	वै. संघापरि	×	×	१ स.	पू.को. पृ + ३ पल्य
त्रस	औ.परि. वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	२००० सा. + पूर्वकोटि पृ.
	आ. ३ पद	१ स.	वर्षपृथक्त्व	"	"

अंतर प्ररूपणा

मार्गणा	कृति	नानाजीव जघन्य	नानाजीव उत्कृष्ट	एकजीव जघन्य	एकजीव उत्कृष्ट
त्रस पर्याप्त	औ.परि.वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	कुछ कम 2000 सा.
	आ. 3 पद	1 स.	वर्षपृथक्त्व	"	"
त्रस अपर्याप्त	औ. संघा	1 स.	अन्तर्मु.	क्षुद्रभव-3 स	अन्तर्मु+1 स
	औ. संघापरि	×	×	1 स	3 स.
पु मनोयोगी, पु वचन योगी	औ.परि, संघापरि	×	×	×	×
	वै.परि. संघापरि	×	×	×	×
	ते.का.संघापरि				
	आ. परि, संघापरि	1 स.	वर्षपृथक्त्व	×	×
सामान्य काययोगी	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव-4 स.	22000 वर्ष+1 स
	औ.परि, वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	पल्य÷असं
	औ. संघापरि	×	×	1 स	अन्तर्मु+1 स.
	वै. संघा.	1 स	अन्तर्मु.	1 स	पल्य ÷ असं.
	वै. संघापरि	×	×	1 स	"
	आ. 3 पद	1 स	वर्षपृथक्त्व	×	×
औदारिक काययोग	औ. परि, वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	कुछ कम 3000 वर्ष
	वै. संघापरि	×	×	"	"
	वै. संघा	1 स	अन्तर्मु.	"	"
	औ. संघापरि	×	×	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.
	आ. परि	1 स	वर्षपृथक्त्व	×	×
औ.मिश्रकाययोग	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव-4 स.	अन्तर्मुहूर्त-1 स.
	औ. संघापरि	×	×	1 स	1 स.
वैक्रियिक काययोग	वै. संघा, वै. संघा परि	×	×	×	×
वै. मिश्र काययोग	वै. संघा "	1 स	12 मुहूर्त	×	×
आ. मिश्र, आहारक	आ. संघा, आ. संघा परि	1 स.	वर्षपृथक्त्व	×	×
आहारक	आ. संघापरि	"	"	×	×

अंतर प्ररूपणा

मार्गणा	कृति	नानाजीव जघन्य	नानाजीव उत्कृष्ट	एकजीव जघन्य	एकजीव उत्कृष्ट
कार्मण काय योग	औदा. परि.	1 स. 13 वे गुण.	वर्षपृथक्त्व 13 वे गुण	×	×
स्त्रीवेदी	औ. संघा	1 स	24 मुहूर्त	अन्तर्मुहूर्त – 3 स.	55 पल्य + पूर्व.को. + 1 स.
	औ.परि. वै.परि	×	×	अन्तर्मुहूर्त	पल्योपमशत पृथक्त्व
	औ. संघापरि	×	×	1 स	55 पल्य + अन्तर्मु + 3 स.
	वै. संघा.	1 स	अन्तर्मु.	1 स.	58 पल्य + पू.को.पृ +
	वै. संघापरि	×	×	1 स.	पूर्वको.पृ. + 3 पल्य 8 पू.को.
पुरुषवेदी	औ. संघा.	1 स	24 मुहूर्त	अन्तर्मु – 3 स.	33 सा + 1 पूर्व को + 1 स
	औ.परि, वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	स[illegible]पमशतपृथक्त्व
	औ. संघापरि	×	×	1 स	33 सा + अन्तर्मु + 3 स
	वै. संघा.	1 स	अन्तर्मु.	1 स.	33 सा + 1 पू.को. + 1 स
	वै. संघापरि	×	×	1 स.	पूर्व.को.पृ + 3 पल्य 8 पू.को.
	आ. 4 पद	1 स	वर्षपृथक्त्व	अन्तर्मु.	सागरोपम शत पृथक्त्व
नपुंसकवेदी	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव – 4 स.	33 सा + 1 पू.को + 1 स
	औ.परि, वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	अनन्त (असं. पुद्ग. परि.)
	औ. संघापरि	×	×	1 स.	33 सा + अन्तर्मु + 3 स
	वै. संघा	1 स	अन्तर्मु.	1 स.	अनन्त (असं. पुद्ग. परि.)
	वै. संघापरि	×	×	1 स.	" "
अपगतवेदी	औ. परि	1 स	6 मास	13 वे गुण (के.स) — 14वाँ गुणस्थान अन्तर्मु.	अन्तर्मु.
	औ. संघापरि	×	×	3 स.	3 स.
	तै.का. परि	1 स.	6 मास	प्रतर. 2 स + 1 लो.पू. ×	प्रतर समु + लोकपूरण ×

स्त्री. औ. संघा. 3. अन्तर → मनुष्यिनी — देवी 16वे स्वर्ग — मनुष्यिनी विग्रह
पूर्वकोटि – 1 स + 55 पल्य + 2 समय = 55 पल्य + 1.पू.को + 1 स

स्त्री. औ. संघापरि. 3. अन्तर → मनुष्यिनी विक्रिया → 16 वे स्वर्ग देवी + मनुष्यिनी विग्रह → औ संघ
अन्तर्मुहूर्त + 55 पल्य + 2 समय + 1 स

स्त्री. वै. संघा. 3. अन्तर → 16 वे स्वर्ग देवी → कर्मभूमी स्त्री → भोगभूमी स्त्री → स्वर्ग देवी विग्रह
55 पल्य – 1 स + 8 पूर्वकोटि + 3 पल्य + 2 समय
वै.संघा.

वै.संघापरि उ.अन्तर → स्वर्गसे च्युत होकर → कर्मभूमी स्त्री + भोगभूमी स्त्री + स्वर्ग में देवी विग्रह) + वै.संघा
अन्तिम समय वै.संघापरि ८ पूर्व को. ३ पल्य २ समय + १ स

पृथक्त्व में अधिक के १ समय या ३ समय गर्भित होजाते है इसलिए यहाँ ३ समय नहीं कहा है। इसीप्रकार पुरुषवेद में भी जानना।

मार्गणा	कृति	नानाजीव		एकजीव	
		जघन्य अन्तर	उत्कृष्ट अन्तर	जघन्य अन्तर	उत्कृष्ट अन्तर
चार कषाय	औ.संघा,औ.परि	×	×	×	×
	वै.परि .तै.आ.संघा, परि	×	×	×	×
	औ. संघापरि	×	×	१ स.	अन्तर्मु.
	वै. संघापरि	१ स	अन्तर्मु.	१ स.	अन्तर्मु.
	वै. संघापरि	×	×	"	"
	आ. २ पद	१ स	वर्षपृथक्त्व	×	×
अकषायी	अपगतवेदी के	समान जानना			
मत्यज्ञानी,श्रुताज्ञानी	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव – ४ स.	१ पूर्वको + ३३ सा. + १ स
	औ.परि. वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	अनन्त
	वै. संघापरि	×	×	१ स	"
	वै. संघा	१ स	अन्तर्मु.	१ स	"
	औ. संघापरि	×	×	१ स	अन्तर्मु + ३३ सा + ३ स.
विभंगज्ञानी	वै.संघा	१ स	अन्तर्मु.	×	×
	अन्य पदोंका	अन्तर नही है	विभंगज्ञान	दूसरे भव में	साथ नहीं जाता।
आभिनि.श्रुत, अवधिज्ञानी	औ. संघा.	१ स.	मासपृथक्त्व	कुछ अधिक १ पल्य	१ पू.को. + ३३ सा + १ स
प्रथम ३ ज्ञान	औ. संघा	१ स.	वर्षपृथक्त्व	"	"
	औ.परि. वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	कुछ अधिक ६६ सा.
	औ. संघापरि	×	×	१ स.	अन्तर्मु + ३३ सा + ३ स.
	वै. संघा.	१ स.	अन्तर्मु	भोगभूमी में गया १ स.	३३ सा + १ पू.को + १ स.
	वै. संघापरि	×	×	१ स.	कुछकम पू.को/३ + ३ पल्य.

किसी जीव ने पूर्वकोटि के त्रिभाग में मनुष्यायु का बन्ध किया उसके बाद अन्तर्मुहूर्त में विशुद्ध होकर सम्यक्त्व प्राप्त किया। उसके पश्चात् अनन्तानुबन्धिक्रिया उत्पन्न

classmate
Date
Page

की तब वैक्रियिक शरीरका संघातन परिशातन किया उसके पश्चात् विक्रिया समेटने पर अन्तर प्रारंभ हुआ। उस जीवने विशुद्ध होकर आगे कहींपर क्षायिक सम्यक्त्व उत्पन्न किया वह मरकर ३ पल्य की आयु लेकर भोगभूमी में मनुष्य हुआ वहाँ से च्युत होकर दो विग्रह सहित सौधर्म या ऐशान स्वर्ग में देव हुआ तीसरे समय में वै. संघातन किया चौथे समय में वै. संघापरि. क्रिया इसलिए वै. संघापरि का अन्तर कुछ कम पूर्वकोटि अधिक ३ पल्योपम कहा है।

मार्गणा	कृति	नानाजीव		एकजीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
प्रथम ३ ज्ञानी	आ. ३ पद	१ स.	वर्षपृथक्त्व	अन्तर्मु.	कुछ अधिक ६६ सा.
मन:पर्ययज्ञानी	औ. परि. वै. परि	×	×	अन्तर्मु.	कुछ कम १ पूर्वकोटि
	वै. संघापरि	×	×	"	"
	औ. संघापरि	×	×	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.
	वै. संघा.	१ स.	अन्तर्मु.	"	कुछ कम पूर्वकोटि.
केवलज्ञानी, यथाख्यात संयमी	औ. परि	१ स.	६ मा.	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.
	औ. संघापरि	×	×	३ स.	३ स.
	तै. का. परि	१ स.	६ मा.	×	×

केवलज्ञान → औ. परि: एकजीव अपेक्षा अन्तर → कपाटसमुद्घात में प्रतर और लोकपूरण समुद्घात में औदारिक शरीर का परिशातन हुआ पुनः अंतर प्रारंभ हुआ पश्चात् अन्तर्मुहूर्त के बाद अयोग केवली होकर औ. शरीर का परिशातन प्रारंभ हुआ इसलिये जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त कहा है।

औ. संघापरि → कपाट समुद्घात → प्रतर २ समय + लोकपूरण १ समय → कपाट समु.

औ. संघापरि → अंतर ———→ औ. संघापरि

मन:पर्यय ज्ञानी में वै. संघा. उत्कृष्ट अन्तर → पूर्वकोटि आयुवाला, औ. परि. आठ वर्ष के पश्चात् संयम धारण किया प्रथम मन:पर्यय ज्ञान की प्राप्ती हुई उसके पश्चात् विक्रिया ऋद्धि से विक्रिया की। तब वै. संघातन हुआ द्वितीय समय से अंतर प्रारंभ हुआ फिर अन्तर्मुहूर्त आयु शेष रहने पर पुनः विक्रिया की तब अंतर समाप्त हुआ इसलिए प्रारंभ के कुछ अधिक आठ वर्ष और अंतर्मुहूर्त से कम पूर्वकोटि अन्तर प्राप्त होता है इसीप्रकार वै. संघापरि, औ. परि, वै. परि का उत्कृष्ट अन्तर जानना।

अन्तर प्ररूपणा

मार्गणा	कृति	नानाजीव जघन्य	नानाजीव उत्कृष्ट	एकजीव जघन्य	एकजीव उत्कृष्ट
संयत	औ. परि, वै. परि	×	×	अन्तर्मु.	कुछ कम पूर्वकोटि
	वै. संघापरि	×	×	"	"
	औ. संघापरि	×	×	३ स.	अन्तर्मु.
	आ. ३ पद	१ स.	वर्षपृथक्त्व	केवलीसमुद्घात में - अन्तर्मु.	कुछ कम पूर्वकोटि
	तै.का. परि	१ स	६ मास	×	×
सामा. छेदो.	औ. संघापरि	×	×	अन्तर्मु.	अन्तर्मु.
	शेष पद संयतवत्				
परिहारविशुद्धि	सब पदों का	अंतर नहीं			
सूक्ष्मसांपरायिक शुद्धि संयत	औ. संघापरि	१ स	६ मास	×	×
	तै.का. संघापरि	"	"	×	×
संयतासंयत	मन:पर्यय ज्ञानी के समान				
असंयत	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव – ४ स.	१ पू.को + ३३ सा + १ स
	औ.परि, वै. परि	×	×	अन्तर्मु.	अनन्त (असं. पुद्ग. परि)
	वै. संघापरि	×	×	१ स.	" "
	औ. संघापरि	×	×	१ स.	अन्तर्मु + ३३ सा + ३ स
	वै. संघातन	१ स	अन्तर्मु	१ स.	अनन्त (असं. पुद्ग. परि)
चक्षुदर्शनी	औ. संघा.	१ स.	२४ मुहूर्त	अन्तर्मु – ३ स.	१ पू.को + ३३ सा + १ स
	औ.परि. वै. परि	×	×	अन्तर्मु.	कुछ कम २००० सा.
	औ. संघापरि	×	×	१ स.	अन्तर्मु + ३३ सा + ३ स.
	वै. संघापरि	×	×	१ स.	पूर्वकोटि पृथक्त्व + ३ पल्य
	वै. संघा.	१ स.	अन्तर्मु.	१ स.	३३ सा + पू.को.पृ + ३ पल्य
	आ. ३ पद	१ स.	वर्षपृथक्त्व	अन्तर्मु.	कुछ कम २००० सा.
अचक्षुदर्शनी	असंयत के समान	सब पद			
	आ. ३ पद	१ स.	वर्षपृथक्त्व	अन्तर्मु.	अर्धपुद्गलपरिवर्तन

अन्तर प्ररूपणा

मार्गणा	कृति	नानाजीव		एक जीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
अवधिदर्शनी	अवधिज्ञानी के	समान			
केवलदर्शनी	केवलज्ञानी के	समान			
कृष्ण, नील, कापोत लेश्या	औ.संघा, औ.परि	×	×	×	×
	वै.परि. तै.का.संघा परि	×	×	×	×
कृष्णलेश्या	औ. संघापरि	×	×	1 स	अन्तर्मु + 33 सा. + 3 स
नीललेश्या	"	×	×	1 स	अन्तर्मु + 17 सा. + 3 स
कापोतलेश्या	"	×	×	1 स.	अन्तर्मु + 7 सा. + 3 स
कृ.नी.का. लेश्या	वै. संघा.	1 स	अन्तर्मु.	1 स.	अन्तर्मु.
" " " "	वै. संघापरि	×	×	1 स.	अन्तर्मु + 3 स. मनुष्य. ति. + 2 वि + 1 वै.सं.
तेज, पद्मलेश्या	औ. संघा.	1 स	मासपृथक्त्व	×	×
	औ.परि, वै.परि	×	×	×	×
तेज	औ. संघापरि	×	×	डेढ़ पल्य	2 सा + ½ सा + अन्तर्मु + 3 स
पद्म	"	×	×	कुछ अधिक 2 सा.	18 सा. + ½ सा + " "
तेज पद्म	वै. संघा	1 स	अन्तर्मु.	1 स.	अन्तर्मु. मनुष्य व तिर्यंच की अपेक्षा
"	वै. संघापरि	×	×	1 स.	अन्तर्मु.
"	आ. 2 पद	1 स	वर्षपृथक्त्व	×	×
शुक्ललेश्या	औ. संघापरि	×	×	3 स. केवलिसमुद्घात	अन्तर्मु + 33 सा + 3 स.
	औ. संघा.	1 स.	वर्षपृथक्त्व	×	×
	औ.परि. वै. परि	×	×	×	×
	वै. संघा	1 स.	अन्तर्मु.	1 स.	अन्तर्मु.
	वै. संघापरि	×	×	1 स.	अन्तर्मु + 3 स.
	आ. 2 पद	1 स.	वर्षपृथक्त्व	×	×

कृष्णलेश्या औ.संघापरि उत्कृष्ट अन्तर → मनुष्य या तिर्यंच कृष्णलेश्या युक्त होने पर प्रथम समय में औ.संघापरि किया, दूसरे समयमें विक्रिया करनेपर अंतर प्रारंभ हुआ → 7 के नरकमें 33 सागरतक रहा मरकर कृष्णलेश्यासहित तिर्यंच 2 विग्रहसे उत्पन्न हुआ, तीसरे समयमें औ.संघा. किया चौथे समय में औ.संघापरि किया इसलिए उसका उत्कृष्ट अन्तर अंतर्मु + 33 सा + 3 समय कहा है।

मनुष्य और तिर्यंचों में अन्तर्मुहूर्त में लेश्यापरिवर्तन होता है इसलिए उतने काल में (यहाँ लेश्या में) औ.परि, वै.परि. का अन्तर घटित नहीं होता.
मनुष्य और तिर्यंच शुभलेश्या में मरण कर स्वर्ग में ही जन्म लेता है इसलिए शुभलेश्या में औ.संघापरि का जघन्य अंतर १ समय नहीं होता.
तेजोलेश्या में सम्यग्दृष्टि देव की घातायुष्क आयु जघन्य डेढ़ पल्य होती है इसलिए तेजोलेश्या में औ.संघापरि का अन्तर डेढ़ पल्य कहा है।
मनुष्य या तिर्यंच → डेढ़ पल्य देवपर्याय → तेजोलेश्या सहित मनुष्य
अंतिम अंतर्मु. तेजोलेश्या । $1\frac{1}{2}$ पल्य तेजोलेश्या → अंतर्मुहूर्त

इसीप्रकार पद्मलेश्या जघन्य आयु कुछ अधिक 2 सा.

पद्मलेश्या मनुष्य या तिर्यंच अंतिम अन्तर्मु → देवपर्याय साधिक 2सा → मनुष्य अन्तर्मु

औ.संघापरि उत्कृष्ट अन्तर तेजोलेश्या
मनुष्य तिर्यंच अंतिम अंतर्मु विक्रिया → देवपर्याय (2रा स्वर्ग) → मनुष्यपर्याय 2मोडा औ.संघा.
अन्तर = अंतर्मुहूर्त + $2\frac{1}{2}$ सा. + 2स + 1स
पद्मलेश्या → मनुष्य, तिर्यंच अंतमें विक्रिया → 12वें स्वर्ग + 2 मोडा + औ.संघा
अन्तर्मु + $18\frac{1}{2}$ सा. + 2स + 1स

इसीप्रकार शुक्ललेश्या अन्तर्मु + 33 सा + 2स + 1स.
मनुष्य सर्वार्थसिद्धि मनुष्य

शुक्ललेश्या जघन्य अन्तर → 3 समय केवली समुद्घात की अपेक्षा

वै.संघा, वै.संघापरि.
1 समय अन्तर ओघ के समान लगाना, शुभलेश्या का अन्तर लगाते समय स्वर्ग में भेजना, अशुभलेश्या के अन्तर में नरक भेजना।

भव्यसिद्धिक की प्ररूपणा – ओघ के समान
अभव्यसिद्धिक में औ. के 3 पद, वै. 3 पदों की प्ररूपणा ओघ के समान जानना।

सम्यग्दृष्टि जीवों की प्ररूपणा आभिनिबोधिक ज्ञानियों के समान है।
विशेष . तैजस व कार्मण परिशातन कृति के नाना जीव का अंतर ना.अं - १ सं, ३ अं ६ मास

अन्तर प्ररूपणा

मार्गणा	कृति	नानाजीव जघन्य	नानाजीव उत्कृष्ट	एकजीव जघन्य	एकजीव उत्कृष्ट
क्षायिक सम्य.	औदा. संघा.	१ स.	वर्षपृथक्त्व	कुछ अधिक पल्य	पल्योपमपृथक्त्व
	औ.परि.वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	३३सा+(दो पूर्वकोटि-८वर्ष)
	आ. २ पद	१ स.	वर्षपृथक्त्व	अन्तर्मु.	,,
	औ. संघापरि	×	×	१ स.	३३ सा+अन्तर्मु+३स
	वै. संघा	१ स.	अन्तर्मु.	१ स.	३३ सा+पूर्वको-अन्तर्मु.
	वै. संघापरि	×	×	१स.	उपल्य+पूर्वको/३
	ते.का. परि	१ स.	६ मास	×	×
वेदक सम्य.	औदा. संघा	१ स.	मासपृथक्त्व	कुछ अधिक पल्य	३३सा+पूर्वको+१स
	औ.परि.वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	कुछ कम ६६ सा.
	आ. २ पद	१ स.	वर्षपृथक्त्व	,,	,,
	औ. संघापरि	×	×	१स.	अन्तर्मु+३३सा.+३स.
	वै. संघा.	१स	अन्तर्मु.	१ स.	३३ सा+१पू.को.+१स
	वै. संघापरि	×	×	१ स.	कुछ कम ३ पल्य
उपशम सम्य.	औ.परि,वै.परि	१ स.	७ रात्रिदिन	×	×
	औ.ते.का.संघापरि	,,	,,	×	×
	वै. संघा.	१स	,,	१ स.	अन्तर्मु
	वै. संघापरि	१स	,,	१स.	अन्तर्मु./अंतरनहीं
सम्यग्मिथ्या	औ. संघापरि	१स	पल्य÷असं	×	×
	औ.शेष२,वै.३पद	,,	,,	×	×
सासादन	औ.संघा,औ.परि	१स.	पल्य÷असं	×	×
	वै.परि.ते.का.संघा परि	,,	,,	×	×
	औ. संघापरि	१स	,,	१स.	अन्तर्मुहूर्त
	वै. संघा, संघापरि	∞	,,	,,	,,
मिथ्यादृष्टि	औ.३पद,वै.३पद	ओघवत्			

क्षायिक सम्यक्त्व में औ.संघात का अन्तर → कर्मभूमि का क्षायिक सम्यग्दृष्टि भोगभूमि में दो मोड़ लेकर उत्पन्न हुआ वहाँ तीसरे समय में औ.का संघातन हुआ उसके पश्चात अन्तर

प्रारंभ हुआ वहाँ जो अभ्युद्दृष्टि की जघन्य आयु हो उतना काल रहकर सौधर्म ऐशान स्वर्ग में गया वहाँ 2½ पल्योपम प्रमाण काल रहकर कर्मभूमि मनुष्य में ऋजुगति से उत्पन्न होकर प्रथम समय में औ. का संघातन करता है उसकी अपेक्षा औ. संघा. का जघन्य अन्तर उपलब्ध होता है।

उत्कृष्ट अंतर में भी इसीप्रकार कहना विशेष भोगभूमि में ३ पल्य रहकर देवों में भी 2 सागर (बहुत पल्य) रहकर कर्मभूमि मनुष्य हुआ उसकी अपेक्षा लेना।

भोगभूमि जीव १,२ रे स्वर्ग की उत्कृष्ट आयु कितनी बांधता है?

यहाँ २ सागर न कहकर पल्योपमपृथक्त्व क्यों कहा है?

पृथक्त्वशब्द बहुलतावाची है। 2 सागर के 20 कोडाकोडी पल्य होते हैं अतः यहाँपर दो सागर को पल्योपमपृथक्त्व से कहा होगा ऐसा लगता है।

मार्गणा	कृति	नानाजीव		एकजीव	
		जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
संज्ञी	औ. संघा.	१स	24 मुहूर्त	क्षुद्रभव–३ समय	पूर्व.को+33 सा+१स.
	औ. परि. वै. परि	×	×	अन्तर्मु.	सागरोपमशतपृथक्त्व
	औ. संघापरि	×	×	१स	अन्तर्मु+33सा + ३स
	वै. संघा.	१स.	अन्तर्मु	१स.	33सा+पू.कोपृ+3पल्य
	वै. संघापरि	×	×	१स.	पू.को.पृ+3पल्य
	आ. ३पद	१स.	वर्षपृथक्त्व	अन्तर्मु.	सागरोपमशतपृथक्त्व
असंज्ञी	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव – ४ समय	पू.को + १स.
	औ.परि. वै.परि	×	×	अन्तर्मु.	पू.को.पृ. + ३ पल्य
	वै. संघापरि	×	×	"	"
	वै. संघा.	१स	अन्तर्मु.	"	"
	औ. संघापरि	×	×	१स	अन्तर्मु+ ३स
आहारक	औ. संघा	×	×	क्षुद्रभव –४स	३३सा+पू.को –१स
	औ.परि, वै. परि	×	×	अन्तर्मु.	अंगुल÷ असं. उत्स.अव (ऋजुगति)
	वै. संघापरि	×	×	१स	"
	वै. संघा.	१स.	अन्तर्मु	१स.	"
	औ. संघापरि	×	×	१स.	अन्तर्मु+ ३३सा.
	आ. ३ पद	१स.	वर्षपृथक्त्व	अन्तर्मु.	अंगुल÷असं. अव.उत्स

	कृति	नानाजीव		एकजीव	
अनाहारक	औ.परि, तै.का.परि	१ स.	६ मास	×	×
	तै.का. संघापरि	×	×	×	×

आहारक मार्गणा में ३३ सा और पूर्वकोटि में एक समय अधिक न बताकर एक समय कम कहा है क्यों कि यहाँ आहारक मार्गणा है यदि जीव द्वो मोडा लेगा तो अनाहारक हो जाता है इसलिए उसे ऋजुगति से उत्पन्न करना है। प्रथम मनुष्यभव के प्रथम समय में औ.शरीरका संघातन किया फिर पूर्वकोटि काल बिताकर स्वर्ग में या नरक में ३३ सागर की आयु लेकर उत्पन्न हुआ वहाँ से ऋजुगति से पुनः मनुष्य हुआ पहले समय में ही औ. शरीर का संघातन किया वहाँ अंतर समाप्त हुआ इसलिए एक समय कम पूर्वकोटि अधिक ३३सा. अंतर कहा है।

मार्गणा का उत्कृष्ट काल ही सर्वत्र औ.परि, वै.परि. आ. ३ पदों का अंतर बताया जाता है।

भावानुगम

सब मार्गणाओं में सब पदों का भाव → औदायिक
तैजस कार्मण परिशातन कृति → क्षायिक
अयोग केवली जिन में शरीर नाम कर्म के उदयक्षय से उन दोनों शरीरों की क्षीणता पायी जाती है।

अल्पबहुत्वानुगम

अल्पबहुत्व दो प्रकार का → 1) स्वस्थान अल्पबहुत्व 2) परस्थान अल्पबहुत्व
1) स्वस्थान अल्पबहुत्व निर्देश दो प्रकार का → 1) ओघनिर्देश 2) आदेशनिर्देश

१	औदारिक शरीर परिशातन कृतियुक्त जीव	सब से स्तोक	असंख्यात जगश्रेणी
2	,, ,, संघातन ,, ,,	अनन्तगुणे	सर्व जीवराशी ÷ असं.
३	,, ,, संघापरि. ,, ,,	असंख्यातगुणे	सर्व जीवराशी के असंख्यात बहुभाग
१	वैक्रियिक ,, परिशातन ,, ,,	सब से स्तोक	असं. घनांगुल जगश्रेणि प्रमाण
2	,, ,, संघातन ,, ,,	असंख्यातगुणे	जगश्रेणि प्रमाण ,, असंख्यात
३	,, ,, संघापरि ,, ,,	असंख्यातगुणे	अपने उपक्रम काल में संचित समस्त राशी

1) आहारक शरीर की संघातन कृति युक्त जीव 2) " " परिशातन " " " 3) " " संघापरि " "	सब से युक्त संख्यातगुणे विशेष अधिक	1 समय में संचित अंतर्मुहूर्त में संचित
1) तैजस . कार्मणशरीर की परिशातन कृति युक्त जीव " " संघापरि " " "	सब से युक्त अनंतगुणे	अयोग केवली संख्यात अनन्त

मार्गणा	कृतियुक्त जीव	अल्पबहुत्व	जीवसंख्या
सब नारकी सब देव	वैक्रि. संघा. वै. संघापरि	सब से स्तोक असंख्यातगुणे	नारकद्रव्य ÷ उपक्रमण काल नारकियों के असंख्यात बहुभाग
सर्वार्थसिद्धि	वै संघा वै. संघापरि	सब से स्तोक संख्यातगुणे	संख्यात संख्यात
तिर्यंच	औ. 3 पदों की प्ररूपणा वै. संघा. वै. परि. वै. संघापरि	ओघ के समान सबसे स्तोक असंख्यातगुणे विशेष अधिक	तिर्यंचराशि ÷ आवली असंख्यात अंतर्मुहूर्त में संचित मूल शरीर में प्रवेश न कर मरण को प्राप्त जीवों से अधिक है
पंचे. तिर्यंच आदि 3	औ. परि औ. संघा औ. संघापरि वै. 3 पदों की प्ररूपणा	सबसे स्तोक असंख्यातगुणे " तिर्यंच के समान	असं. घनांगुल प्रमाण जगश्रेणी पंचे. तिर्यंचराशि ÷ उपक्रमण काल असंख्यात बहुभाग
पंचे. तिर्यंच अपर्याप्त	औ. संघा औ. संघापरि	स्तोक असंख्यातगुणे	
मनुष्य	औ. परि औ. संघा. औ. संघापरि	स्तोक असंख्यातगुणे असंख्यातगुणे	संख्यात असंख्यात समस्त मनुष्य